एमपीईडीए न्यूज़लेटर

खंड - VI / संख्या - 9/ दिसंबर, 2016

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोच्चि - 682 036, केरल, भारत
फोन: +91 484 2311979 फैक्स: +91 484 2313361
ईमेल: ho@mpeda.gov.in वेबसाइट: www.mpeda.gov.in

We are here to help you culture shrimp successfully

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years. And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the sustainability of the Indian Shrimp Indusry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF TURBO PROGRAM - Pioneering Sustainable Aquaculture

C P AQUACULTURE (INDIA) PRIVATE LIMITED
104, G.N.T. Road, Nallur & Vijayanallur Village, Sholavaram Post, Redhills, Chennai - 600 067, Tamil Nadu, INDIA.
Tel : (91-44) 2641467 / 68 / 69, 26419545 / 46 / 47 Fax : (91-44) 26419466, 26419544, 26419550
Email: cpaqua@vsnl.com

एमपीईडीए न्यूज़लेटर

खंड VI / संख्या 9 / दिसंबर, 2016

विषय सामग्री

विपणन समाचार

5 जर्मन कॉन्सल जनरल के साथ संवाद सत्र

9 मिनिस्टर काउंसिलर, दक्षिण अफ्रीका उच्चायोग, नई दिल्ली द्वारा एमपीईडीए का दौरा

11 यूरोपियन यूनियन, जीएसपी पंजीकृत निर्यातक प्रणाली (आरईएक्स)

संकेंद्रित क्षेत्र

15 अक्तूबर, 2016 के दौरान भारत के चुने हुए बन्दरगाहों में समुद्री मछलियों की लैंडिंग की प्रमुख विशेषताएँ

23 समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु मैक्टोफिड़ मत्स्यों का उपयोग

25 "अलंकारिक मत्स्य पोषण और चारा प्रबंधन" पर उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

27 "अलंकारिक मत्स्य प्रजनन और कृषि" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

जलकृषि परिदृश्य

29 "जलकृषि फार्मो के लिए बेहतर जलकृषि प्रणाली, जैव सुरक्षा, और खाद्य सुरक्षा निवारक नियंत्रण" पर प्रशिक्षण कार्यशाला।

33 कृषकों की बैठक और पुलिया का उद्घाटन

35 कृष्णा पुष्करम समारोह

37 **समाचार स्पेक्ट्रम**

5 जर्मन कॉन्सल जनरल के साथ संवाद सत्र

9 मिनिस्टर काउंसिलर, दक्षिण अफ्रीका उच्चायोग, नई दिल्ली द्वारा एमपीईडीए का दौरा

25 "अलंकारिक मत्स्य पोषण और चारा प्रबंधन" पर उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

27 "अलंकारिक मत्स्य प्रजनन और कृषि" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

29 "जलकृषि फार्मो के लिए बेहतर जलकृषि प्रणाली, जैव सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा निवारक नियंत्रण" पर प्रशिक्षण कार्यशाला

इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में उल्लेख किए गए विचार लेखकों के दृष्टिकोण है और एमपीईडीए के विचारों का उससे कोई सरोकार नहीं है। इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में दी गई सूचनाओं की वास्तविकता का उत्तरदायित्व लेखक पर निहित है। उसके लिए न तो एमपीईडीए और न ही संपादक मण्डल उत्तरदाई होंगे।

अफ्रीका में आपका निर्यात उतना ही रोमांचकारी होगा
जितनी कि आपकी पसंदीदा सफारी।

Your exports to **Africa** can be
as thrilling as your favourite safari.

ऐसे देशों का पता लगाएं जहां निर्यात की संभावनायें मौजूद हों।
ईसीजीसी की निर्यात के अनुकूल ऋण जोखिम नीतियों का लाभ उठाएं।

Shift your sights to countries with untapped potential.
Benefit from ECGC's export-friendly credit risk policies.

अधिक जानकारी के लिए ईसीजीसी के निकटतम कार्यालय से संपर्क करें।
For more information contact your nearest ECGC office.

ADVT. NO. : NMD/203/214

ISO 9001: 2008 Certified

Insurance is the subject matter of solicitation.
IRDA Regn.No.124
CIN No. U74999MH1957GO1010918

ईसीजीसी लि.
(पूर्व में भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
पंजीकृत कार्यालयः एक्सप्रेस टावर्स, 10वीं मंजिल, नरीमन पाईन्ट, मुंबई-400 021, भारत. टेलीः 6659 0500 / 6659 0510, फैक्सः (022) 6659 0517. टोल फ्रीः 1800-22-4500.
ईमेलः marketing@ecgc.in • वेबसाइटः www.ecgc.in

ECGC Ltd.
(Formerly Export Credit Guarantee Corporation of India Ltd)
(A Government of India Enterprise)
Registered Office: Express Towers, 10th Floor, Nariman Point, Mumbai - 400 021, India. Tel: 6659 0500 / 6659 0510.
Fax: (022) 6659 0517. Toll-free: 1800-22-4500.
e-mail: marketing@ecgc.in • Website: www.ecgc.in

आप निर्यात पर ध्यान केंद्रित करें, हम जोखिमों से रक्षा प्रदान करेंगे • *You focus on exports. We cover the risks.*

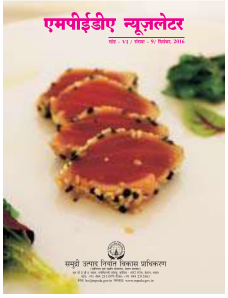

उत्पाद का नाम : टूना सुशी
इमेज : डॉ. टी आर जिबिनकुमार

संपादक मण्डल
श्री बी श्रीकुमार
सचिव
श्रीमती आशा सी परमेश्वरन
संयुक्त निदेशक (क्यू सी)
श्री अनिल कुमार पी
उप निदेशक (जलकृषि)
डॉ टी आर जिबिन कुमार
उप निदेशक (पी और एम पी)

संपादक
डॉ राम मोहन एम के
संयुक्त निदेशक (एम)

मुद्रक एवं प्रकाशक
श्री बी श्रीकुमार
सचिव द्वारा
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची - 682 036 के लिए प्रकाशित
फोन : 91 484 2311979
ईमेल : support@mpeda.gov.in

प्रकाशक:
एमपीईडीए भवन
पनम्पिल्ली एवेन्यू
कोच्ची - 682 036

सहायक संपादक
श्रीमती दिव्या मोहनन के एम
कनिष्ठ लिपिक

कवर डिजाईन
डॉ टी आर जिबिनकुमार
उप निदेशक (पी और एम पी)

मुद्रित
प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017

आप के लिए.....!!

प्रिय मित्रों,

सभी पाठकों को शुभ कामनाएँ!!

नव वर्ष का प्रारंभ निर्यात परिदृश्य में दो नए हस्तक्षेपों के साथ आरंभ हुआ है। पहला है विश्व सीमाशुल्क संगठन (डब्ल्यूसीओ) द्वारा 6 डिजिट और 8 डिजिट स्तर पर विभिन्न उत्पादों केलिए प्रयोग किए जाने वाले एच एस कोड में समरूपता लाने के लिए निर्यात दस्तावेजों केलिए नए एच एस कोड को लागू करना। नया कोड 1 जनवरी, 2017 से लागू हो जाएगा। उसके अनुसार हमारे मुख्य बाजारों ने बहुत से समुद्री खाद्य वस्तुओं पर नए परिवर्तित हुए कोड लगा दिए हैं। राजस्व विभाग और विदेश व्यापार महानिदेशालय ने अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में परिवर्तन के साथ समरूपता लाने के लिए देश से निर्यात किए जाने वाले विभिन्न उत्पादों पर संशोधित कोड पर अधिसूचना जारी की है। एमपीईडीए ने भी कठिनाई रहित निर्यात के लिए तथा उनके साथ समानता बनाए रखने के लिए ऑनलाइन पकड़ प्रमाणीकरण प्रणाली में 6 डिजिट और 8 डिजिट स्तर के कोड को शामिल कर लिया है।

इसके अलावा, मूल यूरोपियन यूनियन के जी एस पी के सक्षम अधिकारी द्वारा स्थान प्रमाणपत्र (सीओओ) फार्म ए में जारी करने की वर्तमान प्रणाली को बदलकर मूल स्थान की विवरिणी (स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन) का प्रयोग करके निर्यातकों द्वारा माल के मूल स्थान के स्वयं प्रमाणीकरण प्रणाली को लागू किया है। इस नई प्रणाली को यूरोपियन यूनियन जी एस पी पंजीकृत निर्यातक प्रणाली (आरईएक्स सिस्टम) नाम दिया गया है, जो आर्थिक ऑपरेटर (निर्यातक) द्वारा स्वयं प्रमाणीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है, जो मूल स्थान का विवरण पर स्वयं प्रमाणित करेंगे। भारत ने 1 जनवरी, 2017 से इस नई प्रणाली को अपनाने का विकल्प चुना है। भारत ने उन एजेंसियों का भी चयन कर लिया है, जो विभिन्न स्तरों पर आर ई एक्स सिस्टम को लागू करने के लिए कार्य करेंगी। एमपीईडीए का मुख्यालय पंजीकरण केलिए स्थानीय प्रशासक के रूप में कार्य करेगा और एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालयों को आरईएक्स प्रणाली में निर्यातकों को पंजीकृत करने के लिए स्थानीय कार्यालय के रूप में निर्धारित किया गया है। हालांकि परिवर्तन के लिए कुछ समय दिया गया है, फिर भी हमने हमारे क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से निर्यातकों को पंजीकृत करने के लिए सुविधा प्रदान की है।

एमपीईडीए को उम्मीद है कि हमारे समुद्री उत्पाद के निर्यात को और बढ़ाने में ये दोनों परिवर्तन सहायक सिद्ध होंगे।

धन्यवाद

दिसंबर 2016 — डॉ. ए. जयतिलक भा प्र से
कोच्ची 36 — अध्यक्ष

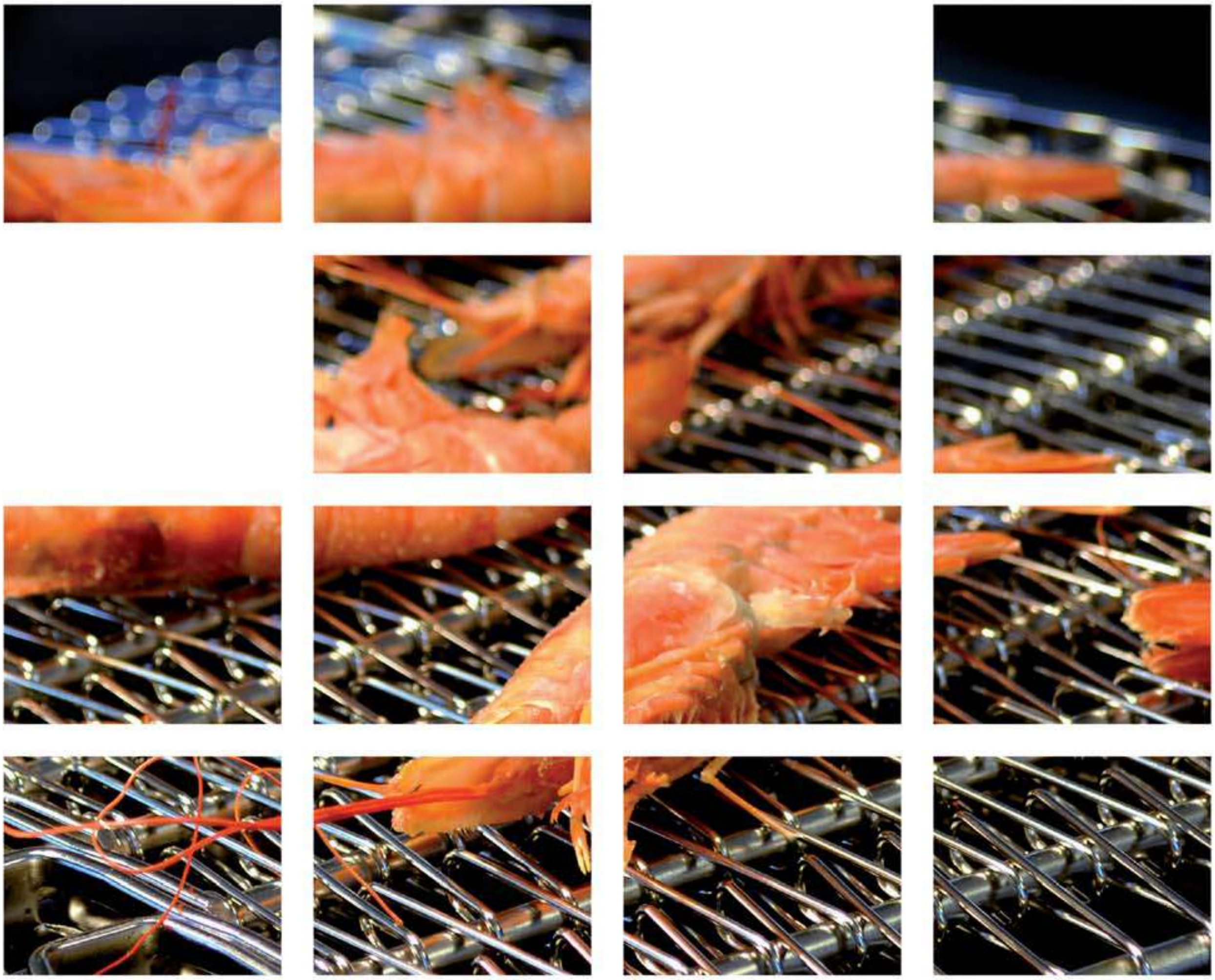

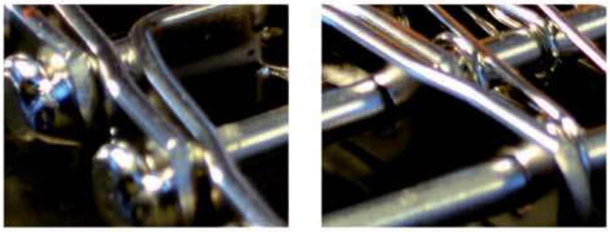

Conveyor belts for the seafood processing industry

Costacurta conveyor belts are used in food processing as well as in many other industrial processes. Thanks to the specific experience gained over more than 60 years, Costacurta can assist the client in the selection of the most suitable type of belt for the specific application. Costacurta conveyor belts are suitable for applications with temperatures ranging from -150°C to +1150°C.

tcb@costacurta.it
www.costacurta.it

VICO Costacurta

जर्मन कॉन्सल जनरल के साथ संवाद सत्र

श्रीमती मरगीत हेलविग बोटी, महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल संवाद सत्र का उदघाटन करते हुए

सभा को संबोधित करती हुई श्रीमती मरगीत हेलविग बोटी, महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल

एमपीईडीए ने स्पाइसेस बोर्ड के सहयोग से 12 दिसंबर, 2016 को श्रीमती मरगीत हेलविग बोटी, महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल के साथ कोचीन में एक संवाद सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम का आरंभ महामहिम और अन्य उच्च पदाधिकारियों द्वारा परंपरागत तरीके से दीप जलाकर किया गया। एमपीईडीए और स्पाइसेस बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. ए. जयतिलक भा प्र से ने महामहिम और अन्य उच्च पदाधिकारियों का स्वागत किया। इस संवाद सत्र के दौरान श्री के मोहम्मद वाई सफीरुल्ला, भा प्र से, जिला कलक्टर, एरणाकुलम; जर्मनी के माननीय कॉन्सल जनरल, तिरुवनंतपुरम डॉ सय्यद इब्राहिम उपस्थित रहे। मुख्य रूप से यूरोपियन यूनियन और विशेषकर जर्मनी को लक्ष्य करने वाले निर्यातकों के साथ साथ गुणवत्ता सर्वेक्षक, विश्लेषक, परामर्शदाता और प्रयोगशालाओं के प्रतिनिधि इस अधिवेशन में उपस्थित रहे।

एमपीईडीए के अध्यक्ष ने अपने स्वागत भाषण में जैविक और कीटनाशक रहित मसालों और समुद्री उत्पादों के अव संरचना के संबंध में विस्तार से बताया। अध्यक्ष महोदय ने उच्च टैरिफ दर, नमूने लेने के बढ़ी हुई दर, परीक्षण करने के तरीकों के पारदर्शी न होने और भाषा का अवरोध आदि समस्याओं के बारे में उल्लेख किया। हैम्बर्ग, जर्मनी के स्पाइस म्यूजियम जैसा म्यूजियम कोच्ची में स्थापित करने हेतु उनके साथ स्पाइसेस बोर्ड द्वारा की गई सहकार्यता का अध्यक्ष महोदय ने उल्लेख किया।

श्री के मोहम्मद वाई सफीरुल्ला भा प्र से, जिला कलेक्टर, एरणाकुलम और जर्मनी के माननीय कॉन्सल जनरल, तिरुवनंतपुरम डॉ. सय्यद इब्राहिम ने कार्यक्रम में बधाई संदेश दिया। जिला कलेक्टर ने कोच्ची को केरल का आर्थिक मुख्यालय बताते हुए कहा कि 45% कर राजस्व कोच्चि से ही प्राप्त होता है, और राज्य के उच्च स्तरीय खाद्य सुरक्षा जागरूकता के बारे में भी उल्लेख किया। उन्होंने कोच्चि में हो रहे प्रमुख अव संरचनात्मक विकास परियोजनाएं जैसे मेट्रो रेल, वाटर मेट्रो, स्मार्ट सिटी, आई टी हब जैसे विकास योजनाओं के बारे में बताया, जो आने वाले वर्षों में कोच्चि शहर को पूरी तरह बदल देगा, जिससे यह शहर निवेशकों और पर्यटकों के लिए एक समान प्रिय लक्ष्य स्थान बन जाएगा।

अपने बधाई संदेश में माननीय कॉन्सल ने जर्मनी के साथ व्यापार में मसालों और समुद्री उत्पादों

के महत्व के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने यह भी कहा कि एमपीईडीए के वेबसाइट में भारतीय सीफूड और मछली के विवरण जर्मन भाषा में दिया जाए तो इससे भारतीय सीफूड निर्यात को बढाने में मदद मिलेगी।

महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल ने अपने भाषण में कहा कि जर्मनी और केरल के बीच व्यापार सम्बन्ध उस समय से हैं जब जर्मनी के व्यापारी पोर्तुगीस जहाज में सवार होकर केरल के मसाले जर्मनी लाया करते थे। कॉन्सल जनरल ने कहा कि अब जर्मनी के सारे व्यापार यूरोपियन यूनियन के माध्यम से नियंत्रित होता है, इसलिए अच्छे व्यापार संबंध के लिए यूरोपियन यूनियन के विनियमों के अनुसार कार्य करना बेहतर होगा। उन्होंने केरल के सार्वजनिक यातायात, विशेषकर जल यातायात में सुधार के लिए जर्मन सहयोग का भी उल्लेख किया।

इस अधिवेशन में एमपीईडीए और स्पाइसेस बोर्ड के व्यापार गतिविधियों पर श्री राम मोहन एम के, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए और श्री प्रत्युष टी पी, सहायक निदेशक, स्पाइसेस बोर्ड ने प्रस्तुतीकरण पेश किया।

इस संवाद सत्र में सीफूड असोसियेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष श्री वी पद्मनाभम ने महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल के साथ ऐसी रचनात्मक बैठक आयोजित करने के लिए एमपीईडीए और स्पाइसेस बोर्ड के अध्यक्ष को बधाई दिया। उन्होंने इस बात की ओर इंगित किया कि यूरोपियन यूनियन से एंटीबायोटिक अस्वीकरण में कमी के बावजूद यूरोपियन आयोग ने फार्म में उत्पादित श्रिम्प में से नमूने का दर 50% बढ़ा दिया है, जिससे भारत से यूरोपियन यूनियन को निर्यातित समुद्री खाद्य पर असर पड़ा है। उन्होंने महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल से गुजारिश की कि यूरोपियन यूनियन

स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए एमपीईडीए के अध्यक्ष डॉ ए जयतिलक, भा प्र से

संवाद सत्र में भाग लेने वाले श्रोता

संवाद सत्र के दौरान वार्तालाप करते हुए सीफूड असोसियेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष श्री वी पद्मनाभम

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए एमपीईडीए के सचिव श्री बी श्रीकुमार

महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल को स्मरणिका देते हुए डॉ ए जयतिलक, भा प्र से, अध्यक्ष, एमपीईडीए

के प्रमुख भाग होने के कारण व्यापारिक मामलों में दखल दें। मेसर्स बेबी मेरीन इंटरनेशनल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अलेक्स नैनान ने कहा कि अस्वीकरण नोटिस जर्मन भाषा के अलावा अंग्रेज़ी में भी दिये जाने चाहिए और महामहिम से अनुरोध किया कि बिज़नेस वीजा लंबे समय यानि कम से कम 5 वर्ष की अवधि के लिए दिये जाएँ। मसाला के क्षेत्र में परीक्षण प्रक्रिया में समन्वय और पारदर्शिता की कमी से ही अस्वीकार की घटनाएँ होती है।

एमपीईडीए के अध्यक्ष ने महामहिम जर्मन कॉन्सल जनरल, माननीय कॉन्सल और जिला कलक्टर को स्मरणिकायें देकर सम्मानित किया और श्री बी श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

विज्ञापन टैरिफ

एमपीईडीए न्यूज़ लेटर

प्रत्येक पृष्ट के लिए दर

अंतिम कवर पृष्ट	(रंगीन)	₹ 7200/-	यू एस डॉलर 160
भीतरी कवर पृष्ट	(रंगीन)	₹ 6000/-	यू एस डॉलर 135
भीतरी पृष्ट	(रंगीन)	₹ 4000/-	यू एस डॉलर 90
भीतरी आधा पृष्ट	(रंगीन)	₹ 2000/-	यू एस डॉलर 45

एक वर्ष या उससे अधिक के कांट्रैक्ट विज्ञापन के लिए दस प्रतिशत छूट दिया जाएगा। विज्ञापन के लिए सामग्री विज्ञापन दाता को सीएमवाईके मोड में जेपीईजी या पीडीएफ़ फॉर्मेट में देना होगा।

मेकेनिकल आंकड़े : सीजे : 27 x 20 से.मी.
मुद्रण : ऑफसेट (बहुरंगीन)
प्रिंट क्षेत्र : पूरा पृष्ट : 23 x 17.5 से.मी.
आधा पृष्ट : 11.5 x 17.5 से.मी.

विवरण के लिए संपर्क करें :
उप निदेशक (पी & एम पी)/ संपादक, एमपीईडीए न्यूज़लेटर
एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोचीन - 36
फोन : +91-484-2321722, 2311979
टेलीफैक्स : +91-484-2312812
ईमेल : newslet@ mpeda.gov.in, pub@mpeda.gov.in

OCEANBLUE
Total Solutions for
Shrimp Processing factories !
SALE
Evaporation Condenser
Evaporation Condenser
Condensing Coil
CABERO
Air Cooler (CABERO)
Evaporating Coil (SS tube & Al fin)
Evaporating Coil (Cu tube & Al fin)
Plate Contact Freezer
Manual Sliding Door
Hermetic
Ammonia Pump (Hermetic)
Valves (JZZL)
SALE
Grading Machine
Washing Machine
Cooking Machine(Water&Steam)
Aluminium (SS) Pan (Tray)
Breading machine (Line)
Tunnel Powder Coating Machine
Shrimp Fryer
Automatic Pan separating Conveyor
Shrimp Peeler
Contact Window:
Mr. Shawn Wang
0086-18660021004
shawnn@live.cn
Mr. Orient Yang
0086-18653549849
yang20131003@live.com
OCEAN BLUE (HK)
DEVELOPMENT LIMITED
16/F, Kowloon Building, 555 Nathan Road,
Mongkok, Kowloon, HongKong

दक्षिण अफ्रीका उच्च आयोग, नई दिल्ली के मिनिस्टर काउंसलर द्वारा एमपीईडीए का दौरा

दक्षिण अफ्रीका उच्च आयोग, नई दिल्ली के अधिकारी श्री म्खुलूली मंखजाना, मिनिस्टर काउंसलर और श्रीमती अफ़ीना अशफाक़ सूचना अधिकारी, कृषि मामले ने दिनांक 8 दिसंबर, 2016 को एमपीईडीए का दौरा किया। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य सामान्य रूप से मत्स्यपालन और मुख्य रूप से कृषि कार्यों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता के विकास के लिए भारत से सहयोग प्राप्त करना था।

श्री म्खुलूली मंखजाना, मिनिस्टर काउंसलर और श्रीमती अफ़ीना अशफाक़ सूचना अधिकारी, कृषि मामले, दक्षिण अफ्रीका उच्च आयोग, नई दिल्ली डॉ. ए जयतिलक भा प्र से, अध्यक्ष, एमपीईडीए से भेंट करते हुए

इस बैठक में एमपीईडीए के अधिकारी, निर्यात निरीक्षण एजेंसी, कोच्ची और निर्यातकों का प्रतिनिधित्व करते हुए मेसर्स बेबी मरीन इंटरनेशनल और मेसर्स कानन मरीन प्रोडक्ट्स उपस्थित रहे। डॉ. ए जयतिलक भा प्र से, अध्यक्ष, एमपीईडीए ने कूटनीतिज्ञों का स्वागत किया और अधिकारियों से उनका परिचय कराया। डॉ. अभिलाष ई सी, तकनीकी अधिकारी (गुणवत्ता नियंत्रण), एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची ने एमपीईडीए के कार्यकलापों और इस वर्ष के सितंबर महीने के दौरान विब्रियो कोलरा अस्वीकरण के मामले पर एक प्रस्तुतीकरण दिया। श्री वी जयकुमार, उप निदेशक ने भारत से निर्यात किए जाने वाले सीफूड की गुणवत्ता को बनाए रखने में निर्यात निरीक्षण एजेंसी के कार्यकलापों के बारे में संक्षेप में बताया। श्री म्खुलूली ने दक्षिण अफ्रीका में कृषि विभाग के कार्यकलापों के बारे में बताया और एक अलग मत्स्य पालन विभाग के गठन के बारे में भी कहा कि पहले यह पर्यावरण मंत्रालय के अधीन था। उन्होंने प्रशिक्षण द्वारा दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों की क्षमता को विकसित करने के लिए भारत से सहायता की अभ्यर्थना की।

उसके बाद निर्यातकों ने दक्षिण अफ्रीका में हुई अस्वीकरण का विवरण देते हुए बताया कि दक्षिण अफ्रीका में विब्रियो कोलरा के लिए

दक्षिण अफ्रीका उच्च आयोग, नई दिल्ली के अधिकारियों के साथ बैठक का एक दृश्य

सैंपल लेने, परीक्षण करने और पुष्ट करने की प्रक्रिया में पारदर्शिता नहीं होना ही उसका कारण है। उन्होंने इस प्रकार के अस्वीकरण की वजह से होने वाली वित्तीय हानि के बारे में भी सूचित किया। निर्यात निरीक्षण एजेंसी के अधिकारियों ने कहा कि इस मामले में दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों के साथ अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है। श्री म्खुलूली ने कहा कि निर्यात निरीक्षण एजेंसी इस मामले को जल्द से जल्द नई दिल्ली स्थित दक्षिण अफ्रीका उच्च आयोग के माध्यम से उठाएँ। उन्होंने इस बैठक के आयोजन के लिए और दोनों देशों के बीच के मामले को सुलझाकर व्यापार को सुदृढ़ करने के लिए मूल्यवान सुझाव हेतु एमपीईडीए और निर्यात निरीक्षण एजेंसी को धन्यवाद दिया। प्रतिनिधि मण्डल ने कोचीन के एक प्रोसेसिंग प्लांट और कोडुंगल्लूर और कोलंचेरी के स्पाइस एक्स्ट्राक्शन यूनिट का भी दौरा किया।

श्री म्खुलूली मंखजाना, मिनिस्टर काउंसलर कृषि मामले को स्मरणिका प्रदान करते हुए एमपीईडीए के सचिव श्री बी श्रीकुमार

यूरोपियन यूनियन जीएसपी पंजीकृत निर्यात प्रणाली (आरईएक्स)

यूरोपियन यूनियन ई यू जी एस पी के अंतर्गत सक्षम अधिकारी द्वारा फार्म ए में उद्भव स्थान प्रमाणपत्र (सीओओ) जारी करने की वर्तमान प्रणाली को स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन का प्रयोग करके निर्यातक द्वारा माल के उद्भव स्थान का स्वयं प्रमाणन से बदल रहा है। भारत 1 जनवरी, 2017 से अपने को नई प्रणाली में बदलेगा।

नया सिस्टम ईयूजीएसपी पंजीकृत निर्यातक सिस्टम (आरईएक्स सिस्टम) के रूप में जाना जाता है, जो आर्थिक ऑपरेटर (निर्यातक) द्वारा स्वप्रमाणन के सिद्धान्त पर आधारित है, जो स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन या उद्भव स्थान का निर्धारण करेगा। स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन देने के लिए आर्थिक ऑपरेटर (निर्यातक) को सक्षम अधिकारी के डाटाबेस में पंजीकृत करना होगा, तब आर्थिक ऑपरेटर "पंजीकृत निर्यातक" बन जाएगा। आरईएक्स सिस्टम सरकारी अधिकारियों द्वारा जारी किए जाने वाले उद्भव का स्थान (फार्म ए) के आधार पर जारी ओरिजिन प्रमाणपत्र को आर्थिक ऑपरेटरों (निर्यातकों) द्वारा कुछ शर्तों के अधीन किए जाने वाले बीजक घोषणा (इन्वोईस डिक्लरेशन्स) से बदल देगा। इसका अर्थ यह हुआ कि आरईएक्स सिस्टम को क्षेत्रीय संचयन लागू करने वाले जीएसपी लाभार्थी देशों के बीच प्रयोग में लाया जाएगा।

यूरोपियन यूनियन स्वप्रमाणन

प्रस्तावित ई यू जी एस पी स्वप्रमाणन स्कीम के अंतर्गत निर्यातक जिनका परेषण का मूल्य 6000 से अधिक ई यू जी एस पी की हो, को निर्यातक (स्वीकृत एजेंसियों द्वारा किए जाने के अलावा) 1 जनवरी, 2017 से स्वयं प्रमाणित कर सकते हैं। इसे एक स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन" के माध्यम से किया जाएगा। हालांकि इस स्कीम को लागू करने के लिए एक वर्ष की अवधि का एक संक्रमण काल है, बशर्ते कि तीसरी पार्टी प्रमाणीकरण के लिए फार्म 'ए' का प्रयोग किया जाए। हालांकि जब एक निर्यातक सक्षम अधिकारी (पंजीकरण के लिए स्थानीय अधिकारी) के पास पंजीकरण करता है, तो उन्हें "स्टेटमेंट ऑन ओरिजिन" (उद्भव स्थान विवरण) जारी करने की आवश्यकता है और तब फॉर्म 'ए' प्रयोग करने का विकल्प नहीं होगा। निर्यातकों का पंजीकरण यूरोपियन यूनियन के पंजीकृत निर्यात (आरईएक्स) सिस्टम के माध्यम से किया जाता है।

स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन का फ़ारमैट इस प्रकार है:

इस दस्तावेज़ में बताये गए उत्पाद का निर्यातक "निर्यातक का आरईएक्स संख्या" एततद्वारा घोषणा करता है कि अन्यथा जब तक स्पष्ट रूप से न बताया जाये, यूरोपियन यूनियन के अधिमानी सामान्य सिस्टम के मूल नियमों के अनुसार यह उत्पाद भारतीय अधिमानी मूल के हैं और यह मूल मानदंड ....

पी (यदि पूरी तरह से प्राप्त किया गया हो)

डब्ल्यू निम्नलिखित किसी भी मामले में डब्ल्यू "निर्यात उत्पाद के 4 डिजिट एच एस कोड़ यदि पर्याप्त कार्य किया गया हो या प्रक्रिया किया गया हो।

यूरोपियन यूनियन/ नॉर्वे/ स्विट्जरलैंड/ टर्की संचयन

क्षेत्रीय संचयन (यदि सार्क संचयन हो तो)

भारत ने निम्नलिखित एजेंसियों को पदनामित किया है, जो इन कार्यों को करेंगे।

प्रशासनिक सहयोग के लिए स्थानीय प्रशासक (ए डी सी) : वाणिज्यिक विभाग, भारत सरकार वह एजेंसी होगी जो यह कार्य करेगी।

पंजीकरण के लिए स्थानीय प्रशासक (आर ई जी): भारत ने 16 एजेंसियों को पदनामित किया है जो अपना कार्य करेगी। वे यूरोपियन यूनियन प्रणाली का मूल्यांकन करने और स्थानीय उपयोगकर्ताओं को पंजीकृत करने के लिए उत्तरदाई होंगे। एमपीईडीए एक ऐसी ही एजेंसी है और एमपीईडीए मुख्यालय स्थानीय प्रशासक के रूप में कार्य करेगी।

पंजीकरण के लिए स्थानीय उपयोगकर्ता: पंजीकरण के लिए स्थानीय प्रशासकों के पदनामित क्षेत्रीय और शाखा कार्यालय वे एजेंसियां होंगी जो इन कार्यों को करेगी। वे निर्यातकों को पंजीकृत करेंगे और उन्हें आरईएक्स (पंजीकृत निर्यातक) संख्या प्रदान करेंगे। एमपीईडीए के सभी क्षेत्रीय और उप क्षेत्रीय कार्यालयों को स्थानीय उपयोगकर्ताओं के लिए आरईएक्स सिस्टम में पंजीकृत करने के लिए पदनामित किया गया है।

आरईएक्स के अंतर्गत निर्यातकों का पंजीकरण

वे निर्यातक जो यूरोपियन यूनियन को जीएसपी के तहत निर्यात कर रहे हैं या निर्यात करना चाहते हैं, उन्हें यूरोपियन आयोग के पंजीकृत निर्यातक (आरईएक्स) सिस्टम में पंजीकृत करने की आवश्यकता है। इसके लिए निर्यातक को पूर्व आवेदन फार्म भरना होगा। यह URL (https://customs.ec.europa.eu/rex-pa-ui/ में ऑनलाइन भरा जा सकता है। आवेदन भरते समय क्रमांक 1 में भारतीय निर्यातक के लिए "पहचान सं "INxxxxxxxxxx" होने चाहिए यानि 'IN' के बाद विदेश व्यापार महा निदेशालय (डीजीएफ़टी) द्वारा आबंटित 10 अंकों की आईईसी होनी चाहिए। ऑनलाइन आवेदन भरने के बाद उसका एक प्रिंट आउट लेना है और निर्यातक को चाहिए कि उसे उसके प्राधिकृत अधिकारी से हस्ताक्षर करवा लें। यदि निर्यातक द्वारा भरे गए विवरण आईईसी से भिन्न हो तो निर्यातक को आईईसी से परिवर्तन का औचित्य ठहराते हुए उसके लिए आवश्यक दस्तावेजी साक्ष्य पंजीकरण के लिए स्थानीय उपयोगकर्ता के पास प्रस्तुत करना होगा।

भारत के लिए, निर्यातकों को एक 20 अंकों की आर ई एक्स संख्या आबंटित किया जाएगा। एमपीईडीए के किसी स्थानीय उपयोगकर्ता को आबंटित किए गए आरईएक्स संख्या का एक नमूना इस पृष्ट के अंत में दर्शाया गया है।

आरईएक्स संख्या प्राप्त होने के बाद निर्यातक स्वयं ही स्टेटमेंट ऑन ओरिजिन जारी करने की स्थिति में हो जाएगा। उसे उसके बाद किसी एजेंसी के पास उद्‌भव स्थान प्रमाणपत्र (फार्म 'ए') जारी कराने के लिए जाना नहीं पड़ेगा। यद्यपि वह विनिर्दिष्ट पूछताछ के लिए स्थानीय प्रशासक और स्थानीय उपयोगकर्ता की सेवाओं को प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, पंजीकरण के बाद, निर्यातक ईयूजीएसपी के अंतर्गत केवल स्टेटमेंट ऑन ओरिजिन का प्रयोग करके ही निर्यात कर सकेंगे। (फार्म ए नहीं)। निर्यातक का यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह इस बात को सुनिश्चित करें कि "स्टेटमेंट ऑन ओरिजिन उद्‌भव स्थान से संबन्धित आवश्यक नियमों का पालन करता है, यानि पूरी तरह से प्राप्त (डबल्यू ओ) उत्पाद विनिर्दिष्ट नियमावली (पीएसआर), संचयन आदि। स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन की एक प्रतिलिपि "पंजीकरण के लिए स्थानीय उपयोगकर्ता (आरईजी)" को भेजना होगा और निर्यातक को उन स्टेटमेंट ऑफ ओरिजिन और उससे संबन्धित दस्तावेजों के अभिलेखों को निर्यात की तारीख से लेकर कम से कम तीन वर्षों तक सहेजकर रखना होगा।

पाठकों को आरईएक्स सिस्टम के बारे में अधिक सूचना प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित लिंक पर जाने की सलाह दी जाती है।

ईयू जीएसपी स्कीम पर सूचना।

https://ec.europa.eu/taxation_customs/bussiness/calculation-customs-duties/rules-origin/general-aspects-preferential-origin/arrangements-list/generalised-system-preferences/

ईयू जीएसपी स्कीम के ई लेर्निंग मॉड्यूल

https://ec.europa.eu/taxation_customs/eu-training/ general- overview/download-portal-eu-customs-taxation-elearning-courses_en.

यूरोपियन यूनियन (ईयूजीएसपी) के लिए ओरिजिन ऑफ गुड्स को जीएसपी के प्रमाणीकरण के लिए सार्वजनिक सूचना।

https://dgft.gov.in/Exim/2000/PN/PN16/PN5116.pdf

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
I	**N**	**R**	**E**	**X**	IEC number										Alphabets assigned to local Admn		Number of the local user		
IN denotes India		Denotes REX number			10 digit IEC (Importer Exporter Code) number of exporter										'MP'		Ranges from 001 to 015		

उदाः INRX1000000000IMP001 (प्रयोग किया गया संख्या केवल उदाहरण के लिए है।

एमपीईडीए के सांख्यिकी विभाग द्वारा तैयार।

e-mail : bangalore-dgft@nic.in

Tel :25537215/213
Fax : 2553 7214

GOVERNMENTOF INDIA
MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY
Office of the Additional Director General of Foreign Trade
" KENDRIYA SADAN ", 6th Floor, C & E Wing, 17th Main Road,
Koramangala, 2nd Block, Bangalore 560 034.
website:jdgft-bangalore.kar.nic.in

Dare:14.12.2016

TRADE NOTICE No.12/2016

In order to facilitate faster clearance of redemption cases and issue of Export Obligation Discharge Certificate (EODC), the process of **'PRE-SCRUTINY based EODC document submission' is being introduced for both Advance authorization as well as EPCG authorisations with immediate effect.**

2. Under the PRE-SCRUTINY system, the trade will have the facility of getting the documents pre-scrutinized before submission. In such cases, EODC would normally be issued within 10 working days of submission of the documents.

3. The PRE-SCRUTINY process would be as follows:

i) Requests for EODC/redemption(each page duly numbered) along with duly filled check sheets, would be accepted between 10 AM to 1 PM at the office counter and a token for the same would be issued.

ii) The results of scrutiny would be informed between 12 noon to 1 PM of the next working day against production of the token. For cases with deficiencies, the complete set of documents would be returned back along with list of shortcomings, by hand. For cases with complete documents, an acknowledgement would be issued at the counter.

iii) Such acknowledged case would be processed and redemption letter/EODC would normally be issued within 10 working days.

4. Trade is requested to avail this facility and if there are any suggestions in this regard, same may be brought to the notice of the undersigned.

VIJAY KUMAR
ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF FOREIGN TRADE.

Sealed Air
Food Care

Leading the way in food hygiene and packaging.

At Sealed Air Food Care, we improve access to a safer, higher quality and more sustainable sea food supply chain.
Our innovative packaging and hygiene solutions and expertise help build our customer's brands and improve food safety, shelf life and operational efficiency while reducing food waste.

FOOD SAFETY

Ensuring food safety is a top priority at Sealed Air, and our unique combination of Diversey™ hygiene and Cryovac® packaging solutions addresses food safety concerns throughout your entire process.

OPERATIONAL EFFICIENCY

With our total systems approach, we are able to view your entire business, and then optimize each section and create cost efficiencies that translate into increased sustainability and revenue.

SHELF LIFE EXTENSION

Creating quality shelf life is a crucial differentiator for running a successful process. We help you extend shelf life and reduce food waste through comprehensive hygienic procedures and innovative packaging systems.

BRAND BUILDING

All stakeholders in the value chain seek to strengthen their brands and grow customer loyalty. We help our clients stand out from an overwhelming number of choices in the marketplace.

CRYOVAC®

Diversey

Sealed Air India Pvt. Ltd.

501 5th Floor Ackruti Centre Point, MIDC Central Road, Andheri (E), Mumbai - 400 093. India
Phone: +91 22 66444222 • Fax: +91 22 66444223 • Toll Free Helpline: 1800 209 2095 • Email: foodcare.india@sealedair.com

अक्तूबर, 2016 के दौरान भारत के चुने हुए बन्दरगाहों में पकड़ी गई मछलियों के विवरण

संतोष एन के, अफजल वी वी, नीतू एन जे व जोइस वी थॉमस, नेटफिश-एमपीईडीए

भूमिका

भारतीय तट के आस-पास पकड़ी जाने वाली मछलियों को नेटफिश मॉनिटर करता है और देश के 9 समुद्री राज्यों से देश के 46 प्रमुख बंदरगाहों और लैंडिंग केन्द्रों पर (सारणी-1) जहाज के आगमन और मछली की लैंडिंग के आंकड़ों की रिकार्डिंग करता है और उस पर नजर रखता है। इस प्रकार एकत्र किए गए आंकड़ों को पकड़ी गई मत्स्यों के प्रजातिवार, राज्यवार, क्षेत्र वार और बंदरगाहवार मूल्यांकन के लिए एम एस ऑफिस (एक्सेल) पर प्रक्रिया की जाती है। यह रिपोर्ट अक्तूबर, 2016 के दौरान भारत के मुख्य बन्दरगाहों पर लैंडिंग किए गए मत्स्यों के आंकड़ों पर प्रकाश डालती है।

तालिका 1 आंकड़े एकत्रित करने के लिए चयन किए गए बन्दरगाह और लैंडिंग केंद्र

क्र. सं.	राज्य	बन्दरगाह
1	केरल	बेपोर
2		पुतियाप्पा
3		तोप्पुंपड़ी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगरा
6		तोट्टंपल्ली
7		कायमकुलम
8		विषिन्जम
9	कर्नाटक	मैंगलोर
10		मालपे
11		गंगोली
12		तडरी
13		कारवार
14		होन्नावर
15	महाराष्ट्र	हरने
16		न्यू फेरी वार्फ
17		रत्नगिरी (मिरकरवाडा)
18		सासोन डॉक
19	गुजरात	वेरावल
20		पोरबंदर
21		मंगरोल
22	पश्चिम बंगाल	दीघा (शंकरपुर)
23		देशप्रान
24		नमखाना
25		सुल्तानपुर
26		काकद्वीप
27		रायदिघी
28	उड़ीशा	पाराद्वीप
29		बलरामगढ़ी
30		बहाबलपुर
31		धमारा
32	आंध्र प्रदेश	विशाखापटनम
33		काकीनाड़ा
34		मछलीपटनम
35		निज़ामपटनम
36	तमिल नाडु	चेन्नै
37		पज़्हैयार
38		नागपट्टिणम
39		तूतूकुडी
40		कडलूर
41		मंडपम
42		चिन्नमुट्टम
43		कोलाचाल
44		पांडिचेरी
45		करईकल
46	गोवा	कटबोना

लैंडिंग के आधार पर आकलन

अक्तूबर, 2016 में चुने गए 46 बन्दरगाहों से रिकॉर्ड की गई कुल फिश लैंडिंग लगभग 1,09,796.41 टन थी, जिनमें से पेलाजिक फिन फिश की मात्रा अधिक रही और यह 57,894.18 टन (53%) थी, उसके बाद शेलफिश 26,571.29 टन (24%) रही और

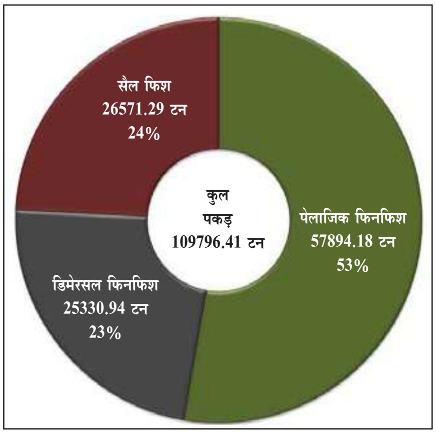

चित्र - 1. अक्तूबर, 2016 के दौरान श्रेणी वार मछलियों की लैंडिंग

शेष 25,330.94 टन (23%) डिमेरसल फिन फिश थी। (चित्र-1)

माह के दौरान कुल 108 प्रकार की मछलियाँ रिकॉर्ड की गईं, जिनमें सबसे ऊपर इंडियन ऑइल सारडीन, रिबन फिश, स्क्विड, इंडियन मेकेरेल और कटलफिश रहे और इन सबों को मिलाने पर यह लैंडिंग का कुल 49% रहा (चित्र 2 देखें)। डस्की फिन्ड बुल्सआई, जापनीस थ्रेड

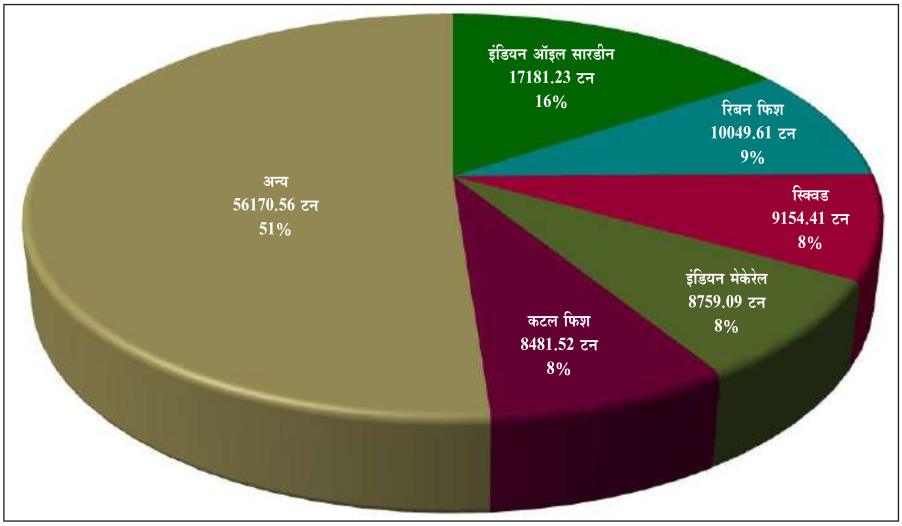

चित्र - 2. अक्तूबर, 2016 के दौरान लैंडिंग होने वाले प्रमुख मदें

बिन ब्रीम, क्रोकर और हॉर्स मेकेरेल आदि भी कुल लैंडिंग में मुख्य स्थान पर रहे और इसकी मात्रा 3000 टन से अधिक रही।

सारिणी 2 में माह के दौरान रिकॉर्ड की गई लैंडिंग का श्रेणीवार और मदवार विवरण दर्शाया गया है। लगभग 49 प्रकार के पेलाजिक फिनफिश लैंड हुए, जिनमें से इंडियन ऑइल सारडीन की मात्रा सबसे अधिक 17,181.23 टन की रही। पेलाजिक मछली की दूसरी मद जिस्की सबसे अधिक लैंडिंग हुई उसमें प्रमुख रिबन फिश और इंडियन मेकेरेल थे जिनकी मात्रा क्रमश: 10,049.61 टन और 8759.09 टन रही। डिमेरसल फिनफिश में बुल्सआई की भागीदारी कुल लैंडिंग में सबसे अधिक लगभग 5468.17 टन की थी और जिनमें से मुख्य भाग यानि 4276.48 टन ङस्की फिन्ड बुल्सआई की थी। जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम की मात्रा 4114.55 टन रिकॉर्ड की गई और उसके बाद क्रोकर्स की मात्रा 3889.08 टन रही। क्रस्टासियन और मोल्लुस्कान स्टॉक्स शामिल शेलफिश लैंडिंग्स कुल लैंडिंग्स के 24% रहे। क्रस्टासियन (7,946.08 टन) के मुक़ाबले मोल्लुस्कान (18,625.21 टन) की लैंडिंग अधिक रही। क्रस्टासियन लैंडिंग्स में मुख्य

तालिका 2. अक्तूबर, 2016 के दौरान विभिन्न मछलियों के प्रजातियों की श्रेणीवार लैंडिंग

मछली का मद	*मात्रा टन में*	*कुल लैंडिंग का %*
पेलाजिक फिन फिश		
इंडियन ऑइल सारडीन	17181.23	15.65
रिबन फिश	10049.61	9.15
इंडियन मेकेरेल	8759.09	7.98
टूना	3843.08	3.50
हॉर्स मेकेरेल	3171.94	2.89
स्काड्स	2845.16	2.59
सीयर फिश	2417.48	2.20
बॉम्बे डक	1257.26	1.15
एंचोवीस	1195.50	1.09
लेदर जैकेट	1126.10	1.03
लेस्सेर सारडीन्स	937.72	0.85
बरक्कुडास	847.22	0.77
स्नाप्पर	815.39	0.74
क्वीन फिश	782.94	0.71
ट्रिवालीस	732.26	0.67
हिल्सा	295.50	0.27
टरदूरे	254.67	0.23
सैल फिश	232.88	0.21
डोलफ़िन फिश	208.86	0.19
वोल्फ हेर्रिंग्स	162.94	0.15
ओरियंटल बोनिटो	148.00	0.13
मरलिन्स	115.00	0.10
नीडिल फिश	104.06	0.09
मुल्लेट	71.73	0.07
कोबिया	66.33	0.06
फ्लेट नीडिल फिश	65.68	0.06
सी बास	51.66	0.05
रेनबो रन्नर	43.46	0.04
सिल्वर सिल्लागो	31.96	0.03
इंडियन इलिशा	30.90	0.03
इंडियन साल्मन	22.30	0.02
मिल्क फिश	20.45	0.02
इंडियन थ्रेड फिश	5.84	0.01
कुल	57894.18	52.73
डिमेरसल फिन फिश		
बुल्स आई	5468.17	4.98
जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम	4114.55	3.75
क्रोकेर्स	3889.08	3.54
रीफ़ कोड्स	2683.47	2.44
लिजार्ड फिश	2419.38	2.20
पोम्फ़ेट्स	2039.74	1.86
कैट फिश	1699.10	1.55
सोल फिश	781.23	0.71
मून फिश	738.70	0.67
ईल	463.16	0.42
गोट फिश	418.81	0.38
रेस	210.54	0.19
पोनी फ़िशेस	121.04	0.11
घोल	86.82	0.08
लॉन्ग स्पाईन सी ब्रीम	43.80	0.04
व्हिप फिन सिल्वर बिड्डी	40.25	0.04
एम्परर ब्रीम	39.40	0.04
व्हाइट स्नैपर	24.13	0.02
इंडियन हालिबट	14.75	0.01
पेर्च	14.46	0.01
स्पाइन फूट्स	9.85	0.01
पैरट फिश	7.51	0.01
स्पेड फिश	1.65	0.00
ट्रिगर फिश	0.80	0.00

फाइल फिश	0.53	0.00
येलो फिन सी ब्रीम	0.05	0.00
कुल	25330.94	23.07
शेलफिश		
क्रस्टासियन्स		
पेनाइड़ श्रिम्प	7136.95	6.50
सी कैब	610.74	0.56
पेनाइड़ श्रिम्प से भिन्न	140.50	0.13
मड कैब	33.19	0.03
लोबस्टर	24.70	0.02
कुल	7946.08	7.24
मोल्लुस्कस		
स्क्विड	9154.41	8.34
कटल फिश	8481.52	7.72
ऑक्टोपस	989.29	0.90
कुल	18625.21	16.96
कुल	26571.29	24.20
कुल जोड़	109796.41	100.00

भाग पेनाईड श्रिम्प की और यह 7,136.95 टन रही, जिनमें से करिक्काड़ी श्रिम्प की मात्रा सबसे अधिक (2,170.33 टन) रही। मोल्लुस्कस में प्रमुखता स्क्विड और कटलफिश की थी और क्रमश: 9,154.41 टन और 8,481.52 टन की लैंडिंग हुई।

क्षेत्र-वार लैंडिंग

क्षेत्र के आधार पर लैंडिंग के आंकड़ों का आकलन करते हुए (चित्र-3) यह देखा गया कि सबसे अधिक 51,392.48 टन यानि कुल लैंडिंग का 47% दक्षिण पश्चिम तट पर रिकॉर्ड किया गया जिसमें केरल, कर्नाटक और गोवा राज्यों में फैले हुए चयन किए गए 15 लैंडिंग स्थानों से था। उत्तर पश्चिम के महाराष्ट्र और गुजरात के 7 चयन किए गए क्षेत्र की भी अच्छी भागीदारी रही और वहाँ से भी 42,768.02 टन (39%) की लैंडिंग हुई। माह के दौरान दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम दोनों क्षेत्रों

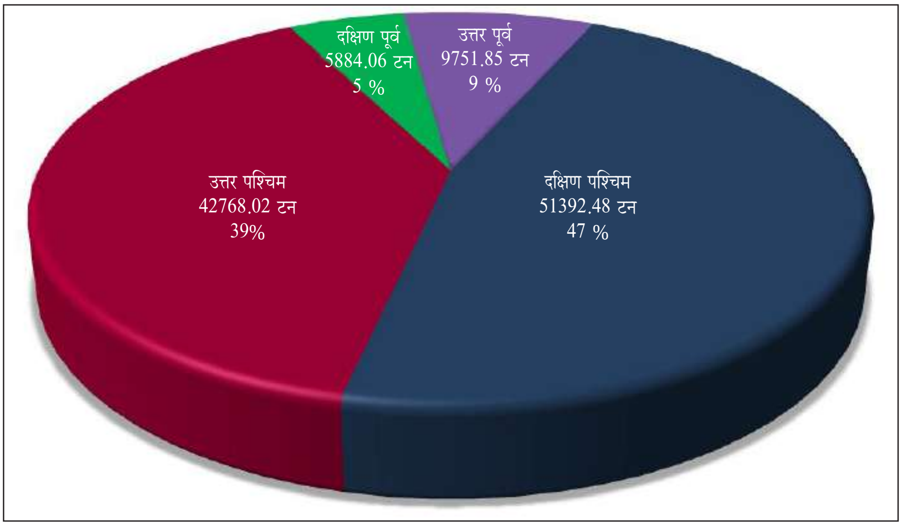

चित्र - 3. अक्तूबर, 2016 के दौरान रिकॉर्ड की गई क्षेत्रवार लैंडिंग

की कुल लैंडिंग मात्रा 86% रही। पूर्वी तट पर ओडिशा और पश्चिम बंगाल के 7 लैंडिंग स्थानों पर कुल 9,751.85 टन (9%) की रही और सबसे कम भागीदारी तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में हुई जहां पर 14 बन्दरगाहों पर लैंडिंग केवल 5884.06 टन (5%) की ही रही।

दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम दोनों क्षेत्रों में हुई लैंडिंग में पेलाजिक फिनफिश की अधिकता रही। माह के दौरान दक्षिण पश्चिम में लैंडिंग हुई पेलाजिक फिनफिश की मात्रा अप्रत्याशित रूप से अधिक रही। (चित्र-4) इसके विपरीत उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व में लैंडिंग में पेलाजिक फिनफिश के मुक़ाबले शेलफिश की मात्रा अधिक रही; जो भी हो, भिन्नता का कोई ज्यादा महत्व नहीं है। माह के दौरान उत्तर पश्चिम को छोडकर सभी क्षेत्रों में डिमेरसेल फिनफ़िश की लैंडिंग सबसे कम रिकॉर्ड की गई।

प्रत्येक क्षेत्र में लैंडिंग में जिन मत्स्य के मदों की प्रमुखता रही उसे तालिका 3 में दर्शाया गया है। सभी चारों क्षेत्रों में रिबन फिश ही वह अकेली मद थी जिसका भाग सबसे अधिक था। (6% से लेकर 11% तक), जिसमें से सबसे

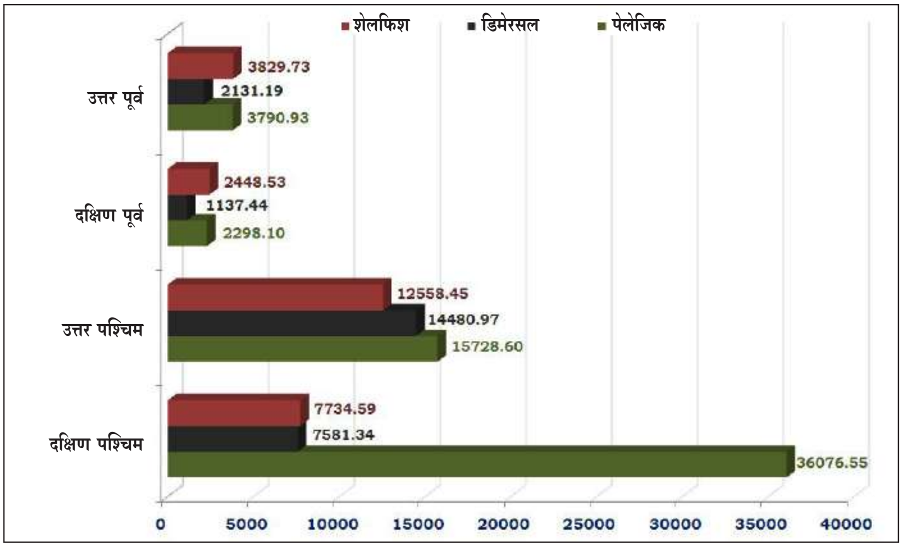

चित्र - 4. प्रत्येक क्षेत्र की कुल लैंडिंग में से श्रेणीवार भागीदारी की तुलना

अधिक मात्रा उत्तर पश्चिम में रिकॉर्ड की गई। दक्षिण पश्चिम, उत्तर पश्चिम और दक्षिण पूर्व में लैंडिंग होने वाले 5 मुख्य मदों में सबसे अधिक स्क्विड और कटलफिश थी। प्रतिशत के हिसाब से स्क्विड की मात्र 5 से 13 प्रतिशत तक और कटलफिश 6 से 10 प्रतिशत तक रही। दक्षिण पश्चिम तटों पर इंडियन ऑइल सारडीन की लैंडिंग बहुत अच्छी रही, जबकि अन्य क्षेत्रों से इसकी मात्रा केवल 200 से 400 टन तक ही रिकॉर्ड की गई।

तालिका : 3 अक्तूबर, 2016 के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में लैंडिंग की गई प्रमुख मदें

मद	मात्रा टन में	क्षेत्र की कुल लैंडिंग में से
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन ऑइल सारडीन	16347.84	31.81
इंडियन मेकेरल	6341.05	12.34
रिबन फिश	4252.20	8.27
कटल फिश	3485.40	6.78
स्क्विड	2942.09	5.72
उत्तर पश्चिम		
स्क्विड	5659.59	13.23
रिबन फिश	4739.64	11.08
कटलफिश	4289.26	10.03
जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम	2820.20	6.59
हॉर्स मेकेरेल	2641.26	6.18
दक्षिण पूर्व		
कटलफिश	563.93	9.58
पूवालन श्रिम्प	479.58	8.15
रिबन फिश	357.46	6.08
स्क्विड	338.50	5.75
इंडियन स्काड	304.58	5.18
उत्तर पूर्व		
करिक्काडि श्रिम्प	1206.59	12.37
क्रोकर	1013.00	10.39
बोम्बे डक	730.16	7.49
रिबन फिश	700.31	7.18
पूवालन श्रिम्प	565.12	5.80

राज्यवार लैंडिंग

लैंडिंग आंकड़ों की राज्यवार विश्लेषण में यह देखा गया है कि कर्नाटक राज्य में सबसे अधिक 36,715.06 टन की लैंडिंग रिकॉर्ड की गई, जो कुल लैंडिंग का 33% होता है (चित्र-5)। उसके बाद का स्थान गुजरात और केरल का रहा जहां पर कुल पकड़ी गई मछलियां क्रमशः 29,290.77 टन (27%) की और 13722.92 टन (13%) की रही। कुल लैंडिंग में से इन तीनों राज्यों में कुल 73% मछलियां पकड़ी गई। महाराष्ट्र में काफी मात्रा में 13,477.25 टन (12%) मछलियों की पकड़ रिकॉर्ड की गई और गोवा में सबसे कम 954.50 टन की पकड़ ही रिकॉर्ड हुए है।

अक्तूबर, 2016 के दौरान प्रत्येक राज्य में लैंडिंग में जिन पाँच मत्स्य मदों की प्रमुखता रही, उसके विवरण तालिका 4 में दिया गया है।

बंदरगाह-वार लैंडिंग

आंकड़े एकत्रित करने के लिए चयन किए गए

तालिका : 4. अक्तूबर, 2016 के दौरान विभिन्न राज्यों में लैंड हुए प्रमुख मदें

मद	मात्रा टन में	राज्य के लैंडिंग का कुल प्रतिशत
केरल		
इंडियन मकेरेल	2212.18	16.12
इंडियन ऑइल सारडीन	1434.95	10.46
कटलफिश	1390.23	10.13
स्क्विड	1360.60	9.91
रिबन फिश	1344.05	9.79
कर्नाटक		
इंडियन ऑइल सारडीन	14854.19	40.46
इंडियन मेकेरल	3602.37	9.81
रिबन फिश	2903.11	7.91
बुल्स आई डस्की फिन्ड	2211.73	6.02
कटलफिश	2095.17	5.71
गोवा		
इंडियन मकेरेल	526.50	55.16
टूना	177.79	18.63
इंडियन ऑइल सारडीन	58.70	6.15

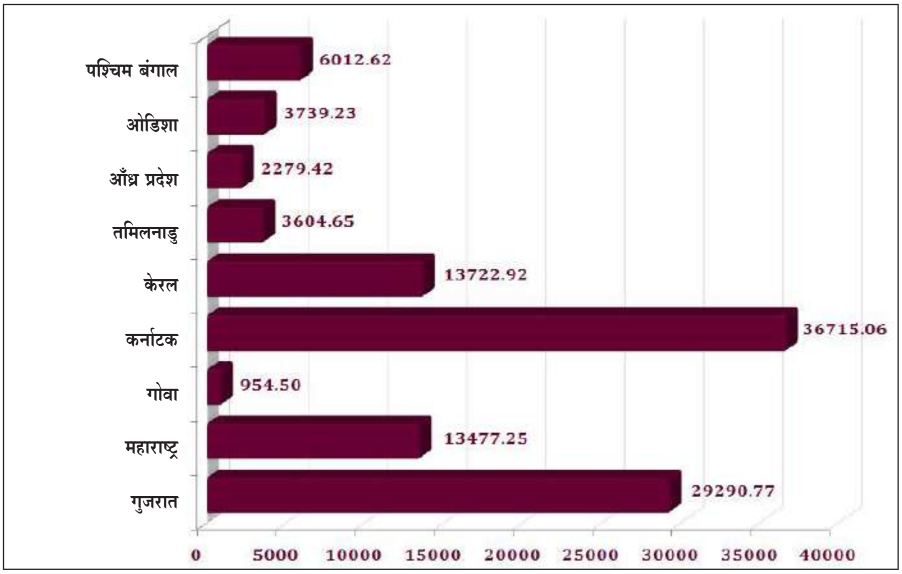

चित्र - 5. अक्तूबर, 2016 के दौरान राज्यवर मत्स्य लैंडिंग (टन में)

ट्रिवाली	51.29	5.37
क्रोकर	49.90	5.23
महाराष्ट्र		
हॉर्स मेकेरेल	2501.26	18.56
इंडियन मेकेरेल	1406.62	10.44
स्क्विड	1093.09	8.11
टूना	1010.01	7.49
डीप बोडीड सार्डीनेल्ला	593.75	4.41
गुजरात		
स्क्विड	4566.50	15.59
रिबन फिश	4364.50	14.90
कटल फिश	3991.00	13.63
जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम	2702.00	9.22
बुल्स आई डस्की फिन्ड	2059.60	7.03
तमिल नाडु		
कटल फिश	511.11	14.18
इंडियन स्काड़	304.58	8.45
स्क्विड	283.50	7.86
इंडियन ऑइल सारडीन	224.57	6.23
रिबन फिश	153.76	4.27
आंध्रा प्रदेश		
पूवालन श्रिम्प	423.40	18.57
रिबन फिश	203.70	8.94
टूना	166.50	7.30
सीयर फिश	151.81	6.66
फ्लॉवर प्रोन	150.94	6.62
उड़ीसा		
करिक्काड़ी श्रिम्प	637.73	17.06
रिबन फिश	612.56	16.38
क्रोकर	461.62	12.35
पूवालन श्रिम्प	205.92	5.51
इंडियन ऑइल सारडीन	166.55	4.45
पश्चिम बंगाल		
बॉम्बे डक	652.65	10.85
करिक्काड़ी श्रिम्प	568.86	9.46
क्रोकर	551.39	9.17
डीप सी श्रिम्प	479.98	7.98
पूवालन श्रिम्प	359.20	5.97

46 बन्दरगाहों में से, गुजरात के वेरावल बन्दरगाह में सबसे अधिक 13,337.79 टन (12%) लैंडिंग रिकॉर्ड किए गए। पश्चिमी तट और पूर्वी तट से हुए बंदरगाहवार लैंडिंग क्रमशः चित्र 6 और 7 में दर्शाया गया है। मालपे और पोरबंदर बन्दरगाह दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे जहां पर क्रमशः 12,055.70 टन और 10,288.48 टन की लैंडिंग हुई। पूर्वी तट पर सबसे अधिक लैंडिंग देशप्रान बन्दरगाह पर हुई जिसका योगदान 2452.58 टन रहा। चयन किए गए 23 बंदरगाहों में अक्तूबर माह में 1000 टन से अधिक लैंडिंग रिकॉर्ड किए गए, जिनमें से 18 बन्दरगाह पश्चिमी तट के और शेष पूर्वी तट के थे। सबसे कम लैंडिंग केरल के विझिंजम बन्दरगाह पर हुई।

जहाजों के आगमन के आधार पर आकलन

चुने हुए बन्दरगाहों में माह के दौरान कुल 39,305 जहाजों के लैंडिंग रिपोर्ट किए गए। जिन बन्दरगाहों में माह के दौरान 1000 से अधिक जहाजों के लैंडिंग रिपोर्ट किए गए उसके विवरण तालिका 5 में दिया गया है। गुजरात के वेरावल में सबसे अधिक 5,384, उसके बाद पोरबंदर 3363 और मैंगलोर में 2,305 जहाजों के लैंडिंग रिकॉर्ड किए गए। बन्दरगाह में लैंडिंग की गई मछलियों के साथ लैंड होने वाली मत्स्यन यानों में से 70% से अधिक ट्रोलर थे। शेष लैंडिंग हुई जहाजें पर्स सीनेर्स, रिंग सीनेर्स, गिल नेटेर्स और पारंपरिक नौकाएँ थी।

तुलनात्मक विश्लेषण

अक्तूबर माह के आंकडों की तुलना अगस्त और सितंबर के आंकड़ों के साथ तालिका 6 में प्रस्तुत की गई है। पिछले कुछ महीनों में और

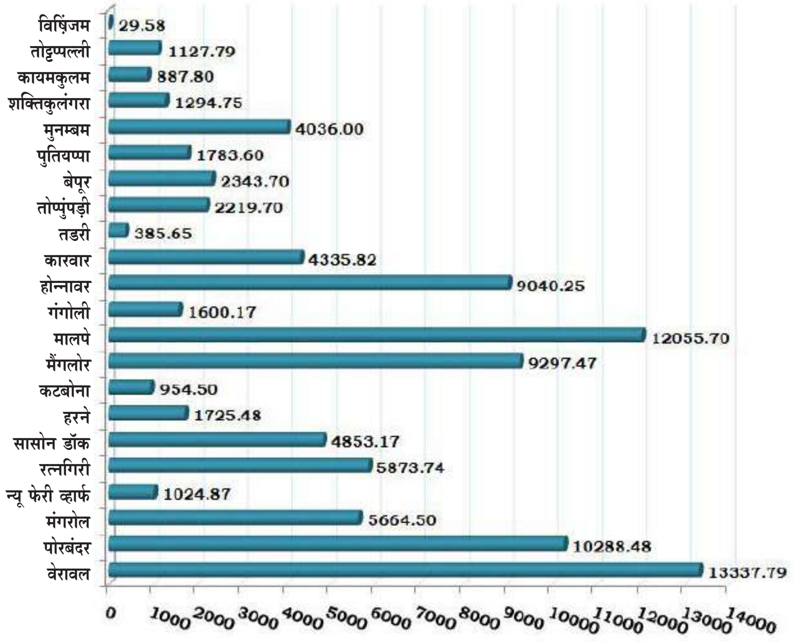

चित्र - 6. अक्तूबर, 2016 के दौरान पश्चिमी तट में स्थित बन्दरगाहों में लैंडिंग (टन में)

www.salemmicrobes.com

Shrimp Hatchery - Shrimp Farming - Fish Hatchery - Fish Farming

"Through technology, innovation and our strong commitment to product quality and service, we aim to help Aqua farmers to accomplish their goal of good production with maximum return on investment"

SALEM MICROBES PRIVATE LIMITED

(An I S O 9001: 2008 certified company)

Regd. Off : No. 21/10C, Bajanai Madam Street, Gugai, Salem - 636 006. Tamilnadu. India.
Customer Care : 91 +427 + 2469928 / 94432 46447 | E-Mail : salemmicrobes@yahoo.co.in

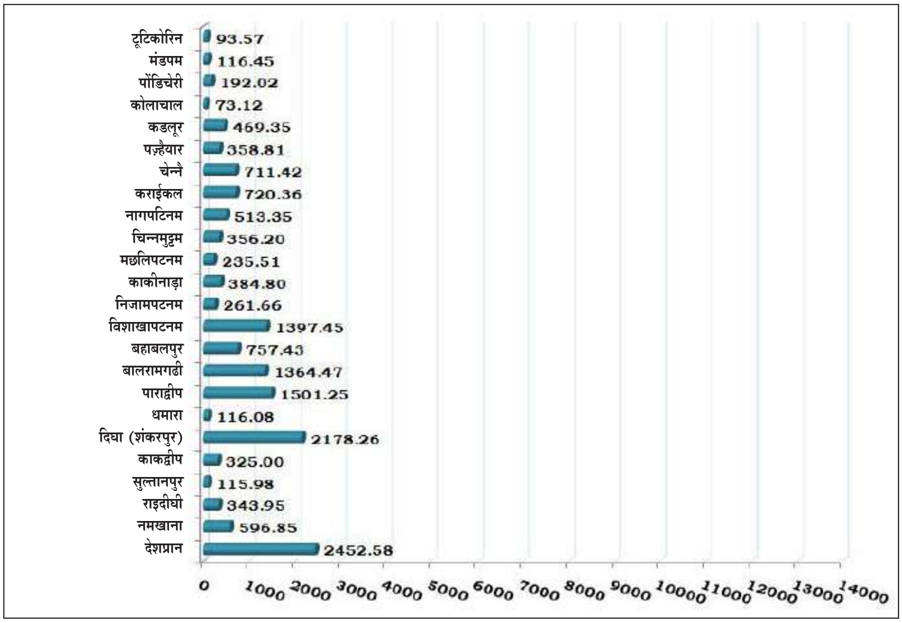

चित्र - 7. अक्तूबर, 2016 के दौरान पूर्वी तट पर स्थित बन्दरगाहों में लैंडिंग (टन में)

सारिणी 5 अक्तूबर, 2016 के दौरान 1000 से अधिक जहाज के लैंडिंग रिकॉर्ड किए गए मत्स्यन बन्दरगाह

क्रमांक	मत्स्यहरण बन्दरगाह	राज्य	बोट लैंडिंग की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	5384
2	पोरबंदर	गुजरात	3363
3	मंगरोल	कर्नाटक	2305
4	मालपे	कर्नाटक	2242
5	मैंगलोर	कर्नाटक	2143
6	न्यू फेरी वार्फ	महाराष्ट्र	1603
7	हारने	महाराष्ट्र	1476
8	सास्सोन डॉक	महाराष्ट्र	1474
9	होन्नावर	कर्नाटक	1269
10	तोट्टप्पल्ली	केरल	1045
11	देशप्रान	पश्चिम बंगाल	1028

सारिणी 6 आंकड़ों की तुलनात्मक समीक्षा

	अगस्त, 2016	सितंबर, 2016	अक्तूबर, 2016
कुल लैंडिंग	48725.30 टन	88248.95 टन	109796.41 टन
पेलेजिक फिन फिश की लैंडिंग	38%	43%	53%
डिमेरसेल फिन फिश की लैंडिंग	23%	25%	23%
शेल फिश की लैंडिंग	39%	32%	24%
सबसे अधिक लैंड हुई प्रजाति	स्क्विड (13%)	स्क्विड 12%	इंडियन ऑइल सारडीन 16%
राज्य में रिकॉर्ड किए गए सर्वाधिक लैंडिंग	केरल (35%)	गुजरात (29%)	कर्नाटक (33%)
बन्दरगाह में रिकॉर्ड किए गए सर्वाधिक लैंडिंग	मुनंबम (12%)	वेरावेल (16%)	वेरावेल (12%)
कुल जहाज की लैंडिंग	24,455	34,716	39,305

अक्तूबर में भी सितंबर के मुक़ाबले मछलियों की कुल पकड़ में 21,500 टन की वृद्धि हुई है और इस प्रकार 1 लाख टन को पार कर गया है। अक्तूबर माह के दौरान पेलेजिक फिनफिश की लैंडिंग में 10% की वृद्धि हुई है, उसके अनुसार शेलफिश और डिमेरसल फिनफिश के लैंडिंग में कमी आई है। अक्तूबर में पकड़ी गई मत्स्य मद की मात्रा में इंडियन ऑइल सारडीन सबसे ऊपर रही और स्क्विड को तीसरे स्थान पर धकेल दिया। अक्तूबर के महीने में सबसे अधिक लैंडिंग कर्नाटक में रिकॉर्ड की गई और गुजरात दूसरे स्थान पर रहा। लैंडिंग के मामले में सबसे अधिक लैंडिंग के साथ गुजरात के वेरावल बन्दरगाह पहले स्थान पर बना रहा। जहाज के कुल लैंडिंग में वृद्धि रिकॉर्ड की गई है और पिछले महीने के मुक़ाबले लगभग 4500 से अधिक बोट लैंडिंग हुई।

सारांश

अक्तूबर, 2016 के दौरान प्रमुख 46 मत्स्यन बन्दरगाहों में रिकॉर्ड किए गए मत्स्य लैंडिंग कुल 109796.41 टन रही, जिनमें पेलेजिक फिन फिश (53%) की मात्रा शेलफिश (24%) और डेमेरसल फिनफिश (23%) दोनों से अधिक रही। सबसे अधिक लैंडिंग पश्चिमी तट के राज्यों में रही, जिनमें प्रमुख भाग कर्नाटक से था। माह के दौरान चुने हुए लगभग 23 बन्दरगाहों में 1,000 टन से अधिक समुद्री मत्स्य की लैंडिंग रिकॉर्ड की गई, जिसमें पश्चिमी तट के बन्दरगाहों की भागीदारी अधिक रही। समुद्री राज्यों में से कर्नाटक, गुजरात और केरल मत्स्य लैंडिंग में प्रमुख स्थान पर रहे और माह के दौरान गुजरात के वेरावल बन्दरगाह में सबसे अधिक लैंडिंग और सबसे अधिक जहाजों के आगमन रिकॉर्ड की गई।

WORLD'S MOST ADVANCED MULTI-FUNCTIONAL TUNNEL FREEZER

- Multi-functional Quick Tunnel Freezer, from 250 to 1,500 Kgs/h, including Infeed conveyor, glazer (spraying/dip), Hardener, synchronized automatic control system for full-line, can freeze all kinds of products (IQF, Head-On in boxes, Nobashi, Breaded, etc.).
- Contact Plate Freezer 500 to 1,500 Kgs/Shift.
- Water Chiller 3,000 to 10,000 Ltrs/h, Insulated water tank and falling film unit.

Contact: B. S. Sankara Rao
Mobile: +91 9866674760, +91 8978334062

B. S. ENGINEERING SERVICES
[Refrigeration & Engineering works]
Visakhapatnam, India.
E-mail: bsee.vizag@gmail.com

MECHANICAL & THERMAL WORKS

GLORY CO., LTD.
Leading in Freezing Equipment
Ho Chi Minh City, Vietnam.
E-mail: info@glory.vn

समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु मैक्टोफिड मत्स्यों का उपयोग करना

लिजिन नम्बियार एम एम, वरिष्ठ रिसर्च फ़ेलो (एस आर एफ़), केंद्रीय मात्स्यिकी तकनीकी संस्थान, कोचीन, केरल - 682 029

मैक्टोफिड विश्व के समुद्री जल में सबसे अधिक पाई जाने वाली मेसोपेलेजिक मत्स्य है। वे 30-35 जनरा में शामिल 230-250 प्रजातियों में पाई जाती है (पाक्सटन, 1972, 1979)। मेसोपेलेजिक में 65% आबादी (बायोमास) मैक्टोफिड की है और यह विश्व में इसके 550-660 मिलियन टन होने का आकलन किया गया है। मैक्टोफिड नाम ग्रीक भाषा से लिया गया है, जिसमें 'मईक्टर' शब्द का अर्थ 'नाक' और 'ऑफिस' शब्द का अर्थ है 'सांप'। इन मछलियों को बायोलुमिनीसेंस या प्रकाश उत्पन्न करने वाले सेल के प्रयोग करने की विशिष्टता की वजह से साधारणतः 'लांटेन मछली' भी कहा जाता है। वे साधारण तौर पर 3-30 से मी साइज़ के होते हैं, और वे कुंद सर वाले और बड़ी बड़ी आँखें और शरीर और सर पर फोटोफोरस (प्रकाश उत्पन्न करने वाले सेल) की पंक्तियाँ लिए हुए होते हैं। खुले समुद्र के भोजन और ऊर्जा की गतिशीलता चक्र में, विशेषकर प्राथमिक उपभोक्ताओं, अन्य उपभोक्ताओं और वाणिज्यिक रूप से पकडी जाने वाले मत्स्य जैसे टूना, शार्क और अन्य समुद्री जीव जैसे सी लयन, व्हेल, सील्स और समुद्री पक्षियों के भोजन के लिए उनका बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है।

केवल अरब की खाडी में ही 100 मिलियन टन से अधिक माइक्टोफिड प्रजातियाँ है (Gj Saeter, 1984; हुसैन एंड खान, 1987; यू एस ग्लोबेक, 1993)। अरब की खाड़ी में और भारतीय महासागर के दक्षिणी भाग में रिपोर्ट किए गए 55 मैक्टोफिड प्रजातियों में से 27 प्रजातियाँ भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्र में ही

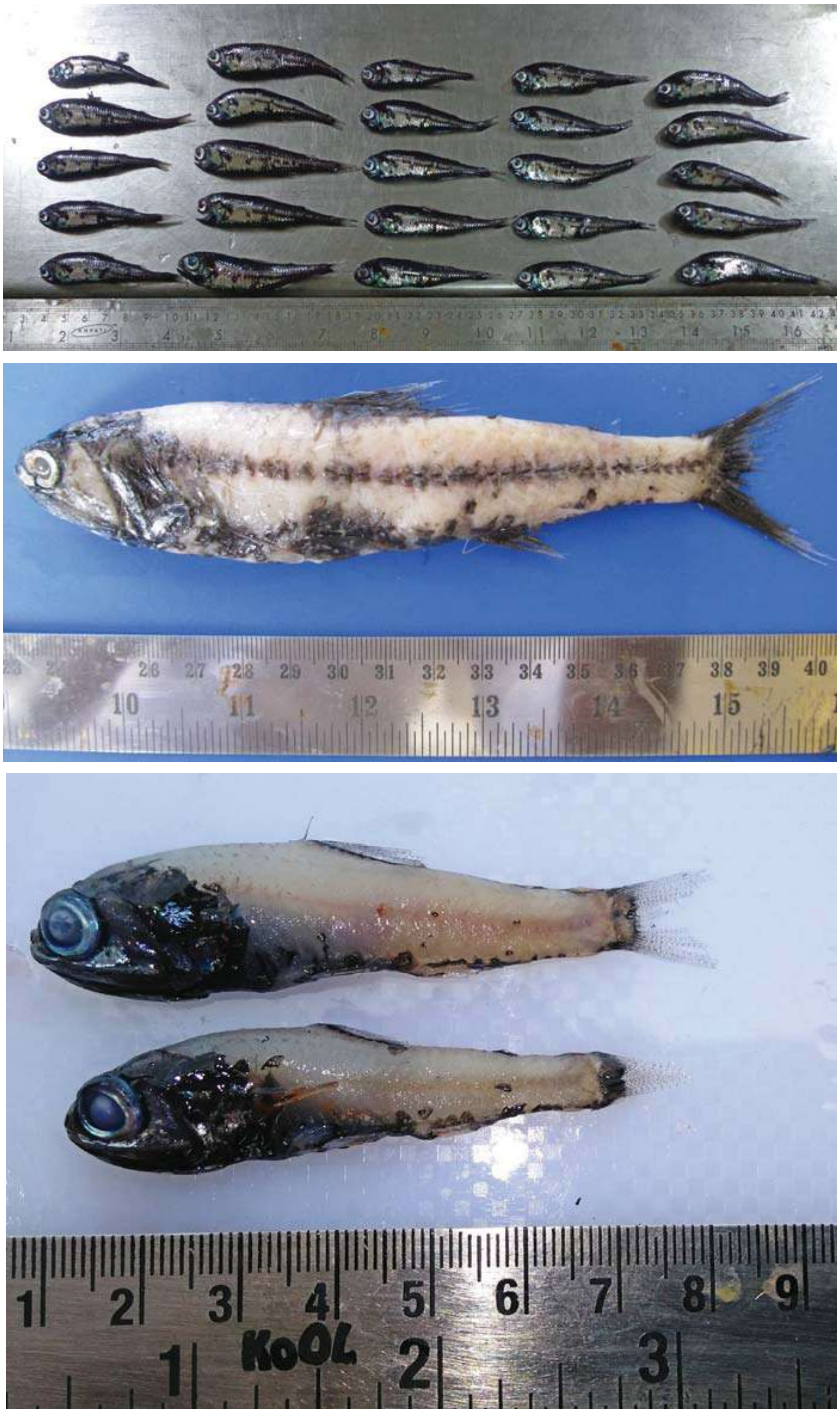

मैक्टोफिड की विभिन्न प्रजातियाँ

*ईमेल : lijin141@yahoo.com

उपलब्ध है (कोर्निलोवा एंड सरीन, 1993; करुप्पस्वामी एट अल., 2006) सभी रिकार्ड की गई प्रजातियाँ दिवाचर प्रवासन करने वाले हैं और दिन के दौरान न्यूनतम ऑक्सीज़न लेवल (<0.1 ml O_2 1.1) में रहते हैं और रात को भोजन के लिए भरपूर ओक्सिजन वाली सतह पर आती है। यह मछली रात को छिछले (<100 मी) पानी में या सतह पर (<5 मी) ऊपर आती है और दिन के दौरान गहराई में (250 से >1000 मी) लौट जाती है (एफ़ ए ओ, 1997)। वलदेमरसेन (2004) ने सुझाव दिया है कि सफलता से मैक्टोफिड को पकड़ने के लिए काफी बड़े और कम से कम 20 मी सीधे खुले, संयत मेष साइज़ जिसके सामने के भाग में (100 मिमी) और बेल्ली के पीछे के भाग में 30 मिमी और जो लगभग 8 मी डायामीटर की हो और कोड्ेंड मेष जिसका साइज़ 10 मिमी मेष साइज़ से कम होना चाहिए, का प्रयोग करें।

मैक्टोफिड मछलियाँ सामान्य मछलियों की तरह आवश्यक अमीनो एसिड से भरपूर है। सबसे अधिक पाये जाने वाले अमीनो एसिड ग्लूटामिक एसिड, आस्पराटिक एसिड, लाइसिन, ल्यूसिन और अरगिनीन है। मैक्टोफिड में पाये जाने वाले कुल आवश्यक अमीनो एसिड की मात्रा ऑइल सारडीन और ब्लू कैब के समान ही है और गहरे समुद्री लोब्स्टर, इंडियन वाईट प्रोन और रीफ़ कोड में पाये जाने वाले से अधिक है। नमी की मात्रा 57.5 से 79.2% तक है, प्रोटीन 11.3 से 15.7% तक, लिपिड 4.9 से 28.5% तक और एष की मात्रा 1.8 से 3.1% तक है। ये प्रजातियाँ सोडियम, पोटासियम और कैल्सियम जैसे मेक्रो मिनरल्स के अच्छे स्रोत है। अध्ययन किए गए मैक्टोफिडाई प्रजातियों में उच्च स्तर के मोनोसेचुरेटेड फेटी एसिड (एम यू एफ़ ए: कुल फेटी एसिड के 33.8 से 53.5% तक) है। कुल पीयूएफ़ए 17.5 से 36.6% तक के बीच है और कैलोरिक मूल्य 6.1 से 13.3 केजे 1 (नम वजन के आधार पर) तक है। आवश्यक फेटी एसिड जैसे ईपीए और डीएचए इन मछलियों में बहुत अधिक है। मैक्टोफिड सहित बहुत सी पकडी जाने वाली छोटी मछलियों को समुद्र में ही फेंक दिया जाता है, क्योंकि वर्तमान में उसका वाणिज्यिक मूल्य बहुत कम है और इसके अलावा जहाज में उसे सुरक्षित रखने की कोई तकनीक भी नहीं है। इन मछलियों में बहुत अधिक वैक्स एस्टर होने की वजह से उसे सीधे खाने के लिए प्रयोग में नहीं लाया जाता और उसे फिशमील, तेल और चारा बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है, जिसका विभिन्न उद्योगों में बहुत अधिक प्रयोजन है। चूंकि सभी प्रकार की मछलियाँ का दोहन हो गया है या अधिक दोहन हो चुका है, इसलिए भविष्य के विकास के लिए जैसे मत्स्य आधारित उद्योग (i) अक्वाकल्चर के लिए खाद्य (ii) चूरा किए गए माँस से सुरिमी तैयार करने और (iii) बॉडी फ़ैट से कोसमेटिक और लुब्रिकेटिंग ऑइल आदि तैयार करने के लिए बढ़ती हुई मांग को देखते हुए इन मेसोपेलेजिक मत्स्यों की बहुत अधिक संभावना है।

सदस्यता आदेश / नवीकरण फार्म

कृपया एमपीईडीए न्यूज लेटर के सदस्य के रूप में मुझे / हमें नामांकित करें। एक वर्ष की सदस्यता शुल्क के रूप में सचिव, एमपीईडीए के नाम एरणाकुलम, केरल में भुगतान हेतु रु. 480/- के मूल्य का चेक/ मांग ड्राफ्ट सं. ....
दिनांक .... इसके साथ संलग्न है।

कृपया पत्रिका निम्न पते पर भिजवायें।

....

....

दूरभाष सं.: .... फैक्स : ....

ई-मेल : ....

विवरण के लिए कृपया संपर्क करें :

संपादक, एमपीईडीए न्यूज़ लेटर, एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली नगर, कोच्चि-682036

दूरभाष : 2311979, 2321722 फ़ैक्स 91-484-2312812/ ई-मेल : newslet@mpeda.gov.in

आलंकारिक मत्स्य पोषण और खाद्य प्रबंधन पर उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने केरल के मत्स्य एवं समुद्री अध्ययन विश्वविद्यालय के साथ मिलकर केयूएफओएस, पनंगाड़, कोचीन में दिनांक 23 से 24 नवंबर, 2016 तक 'आलंकारिक मत्स्य पोषण और खाद्य प्रबंधन' पर एक 2 दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आलंकारिक मत्स्य प्रजनकों को इस क्षेत्र के प्रसिद्ध विशेषज्ञों से आलंकारिक मत्स्य पोषण के लिए जीवित खाद्य कृषि के आधुनिक तकनीकों के बारे में नवीनतम जानकारी प्रदान करना था।

केरल के मत्स्य और समुद्री अध्ययन विश्वविध्यालय के उप कुलपति प्रो. डॉ. ए. रामचंद्रन ने उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. रामचंद्रन ने ग्रामीणों के उत्थान में आलंकारिक मत्स्य की कृषि के महत्व पर प्रकाश डाला और आलंकारिक मत्स्य कृषि का इतिहास और आजीविका कमाने के लिए उसके महत्व पर एक संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया। प्रो. रामचंद्रन ने उद्योग के समग्र विकास के लिए हितधारकों के बीच परस्पर विश्वास रखने और आपस में सूचनाओं का आदान प्रदान करने के महत्व का भी उल्लेख किया।

श्री के.एन. विमल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय कोच्ची ने इस समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया और, डॉ. बिनु वर्गीस, सहायक प्रोफेसर, केयूएफ़ओएस के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ। केरल के विभिन्न भागों से आए चालीस आलंकारिक मत्स्य प्रजनक, जो एमपीईडीए द्वारा चलाये जा रहे योजना के लाभार्थी भी हैं, 2-दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

तकनीकी सत्रों का संचालन डॉ. बिनु वर्गीस, केयूएफओएस, डॉ. पी. विजयगोपाल, प्रिंसिपल साइंटिस्ट, मत्स्य पोषण, सीएमएफआरआई, डॉ. एस. श्यामा, प्रोफेसर, अक्वाकल्चर विभाग, केयूएफओएस, डॉ. लियोनी लिबिनी, सहायक प्रोफेसर, अक्वाकल्चर विभाग, केयूएफओएस, श्री जूडिन जॉन चाको, मत्स्य विभाग, केरल सरकार, और डॉ. मिथुन सुकुमारन, सहायक प्रोफेसर, अक्वाकल्चर विभाग, केयूएफओएस आदि ने किया।

आलंकारिक मत्स्य पोषण, केरल से निर्यात किए जाने वाले विविध आलंकारिक मत्स्यों के पोषण संबंधी पहलुओं, आलंकारिक मत्स्य कृषि में तैयार किए जाने वाले खाद्य का महत्व, आलंकारिक मत्स्य कृषि में खाद्य प्रबंधन, सूक्ष्म शैवाल और उसकी कृषि का महत्व, आलंकारिक मत्स्य कृषि के लिए जीवित खाद्य और आलंकारिक मत्स्य कृषि में आर्टेमिया आदि के महत्व पर प्रकाश डाला और उस पर चर्चा की गई और साथ ही साथ खाद्य फार्मूलों और जीवित खाद्य कृषि के रखरखाव पर प्रायोगिक सत्र भी आयोजित किये गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केरल के मत्स्य और समुद्री अध्ययन विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो. डॉ. ए. रामचंद्रन

AQUA MART™
by WESTCOAST™ GROUP
Your Trusted Partner for Aquaculture Solutions
AQUA-LIFE
SHRIMP HARVESTER
xpertSea
XperCount2
Xpercount 2
YSI
DO METERS
ATAGO
REFRACTOMETERS
SHRIMP & FISH SEED
BIO NURTURE
COLLAPSIBLE NURSERY TANKS
BIOFIT GSE
PE LINING
BIO BOOSTER
SHRIMP & FISH FEED
Re-seller enquiries solicited • E-mail: aquamart@westcoast.in
West Coast Fine Foods (India) Private Limited.
1401-D, Lotus Corporate Park, Gram Path, Goregaon East, Mumbai 400063, Mobile: +91 7045112255 • Website: www.aquamartindia.in

‘आलंकारिक मत्स्य प्रजनन और फ़ार्मिंग’ पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची ने सेक्रेट हार्ट कॉलेज, कोच्ची के अक्वाकल्चर विभाग के सहयोग से 15 से 18 नवंबर, 2016 तक ‘अलंकारिक मत्स्य प्रजनन और फ़ार्मिंग’ पर एक 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम एस एच कॉलेज, तेवरा, कोच्चि में आयोजित किया। इस वर्ष सेक्रेट हार्ट कॉलेज, कोच्चि में एमपीईडीए द्वारा आयोजित की जाने वाली यह दूसरी कार्यशाला थी।

रेवरेंड डॉ जोस कुरिएड़त, प्रबन्धक, एस एच कॉलेज प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए (बाएँ से दायें) श्रीमती एल्सम्मा इत्ताक, सहायक निदेशक, एमपीईडीए, डॉ वी सी जॉर्ज, अक्वाकल्चर विभाग के अध्यक्ष, एस एच कॉलेज, श्री के एन विमल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए, रेवरेंड डॉ जॉनसन पालक्कापल्लिल, प्रिन्सिपल, एस एच कॉलेज, डॉ अन्ना मेर्सी, पाठ्यक्रम निदेशक

रेवरेंड डॉ जोस कुरिएड़त, प्रबन्धक, एस एच कॉलेज ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उदघाटन भाषण में आलंकारिक मत्स्य के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ वी सी जॉर्ज, अक्वाकल्चर विभाग के अध्यक्ष ने उपस्थितों का स्वागत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय के संयुक्त निदेशक श्री के एन विमल कुमार ने की। एस एच कॉलेज के प्रिन्सिपल रेवरेंड डॉ जॉनसन पालक्कापल्लिल ने मुख्य प्रभाषण दिया। एमपीईडीए के सहायक निदेशक (ओएफ़डी) श्रीमती एल्सम्मा इत्ताक ने बधाई संदेश दिया। प्रारम्भिक सत्र की समाप्ति एमपीईडीए के तकनीकी परामर्शदाता (ओएफ़डी) डॉ रंजीत कुमार के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। राज्य के विभिन्न भागों से 25 प्रशिक्षार्थी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

डॉ अन्ना मेर्सी, पाठ्यक्रम निदेशक, श्री जुड़ीन जॉन चाको, मत्स्य विभाग, केरल सरकार, श्री वेणुगोपाल, आमजोन रिवुलेट, पनंगाड़ और कुमारी संगीता, प्रवक्ता, एस एच कॉलेज आदि लोगों ने तकनीकी सत्र का संचालन किया। आलंकारिक मत्स्य कृषि की संभावना और उसका महत्व, आलंकारिक मत्स्य का कैप्टिव प्रजनन, फार्मों में पानी की गुणवत्ता प्रबंधन के तरीके, आलंकारिक मत्स्य कृषि में जैविक सुरक्षा और आलंकारिक मत्स्यों की पैकिंग और परिवहन, जीवित खाद्य कृषि पद्धति, ग्लास टैंकों का निर्माण और अक्वेरियम का गठन / फिल्टर्स, मछलियों में लैंगिक द्विरूपता आदि विषय प्रस्तुत करके उस पर चर्चा की गई।

प्रशिक्षार्थियों को फार्म के कार्यकलापों से परिचय हेतु अवसर प्रदान करने के लिए 18 नवंबर, 2016 को एक फील्ड दौरे का भी आयोजन किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

प्रशिक्षार्थियों द्वारा फील्ड दौरा

Looking for the perfect Metal Detection solution for all your seafood needs?

The **ASN 9000** is ideal for high quality food production environments, offering a range of versatile, space saving conveyorised solutions for in-process and end of line inspection in a variety of seafood products.

+ Brand Protection

Regardless of products being wet, dry, hot, chilled or frozen, the **ASN 9000** has Profile technology to provide **ultimate metal detection capability**.

+ Compliance

ASN 9000 metal detection systems meet the IFS (International Food Standard), BRC (British Retail Consortium), SQF 2000 (Safe Quality Food) and FSSC 22000 food standards.

+ Cost Reduction

ASN 9000 offers optimsed operational efficiency and better sensitivity to detect metal contaminants.

+ Increasing Productivity

Your production processes are optimised with **ASN 9000** which increases operational efficiency and reduces the potential for lost production.

For more information on ASN 9000 metal detection solutions or to download your **free** white paper **"Enhancing Levels of Due Diligence: Exceeding Standards In The Food Industry "** visit

www.mt.com/pi-asn9000-seafood

For more information, contact

Toll Free **1800 22 8884 & 1800 10 26460**

sales.mtin@mt.com

METTLER TOLEDO

"जलकृषि फार्मों के लिए बेहतर जलकृषि प्रणाली, जैव सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा निवारक नियंत्रण" पर प्रशिक्षण कार्यशाला

यू एस खाद्य एवं औषधि प्रशासन (यूएसएफ़डीए) ने समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के सहयोग से "जलकृषि फार्मों के लिए बेहतर जलकृषि प्रणाली, जैव सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा निवारक नियंत्रण" पर 17 से 18 नवंबर 2016 तक विशाखापट्टनम में एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित किया।

यह कार्यशाला प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में आयोजित की, जिसमें समुद्री मत्स्य उद्योग के विभिन्न भागीदार जैसे राज्य मत्स्य विभाग और केंद्रीय सरकार के संस्थानों, राष्ट्रीय मत्स्य पालन विकास बोर्ड (एनएफडीबी), निर्यात निरीक्षण परिषद (ई आई सी), केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई), केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईएफटी), राष्ट्रीय मत्स्य पालन संस्थान पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलोजी और ट्रेनिंग (एनआईएफपीएचएटीटी), केंद्रीय मत्स्य नौचालन और इंजिनीयरी प्रशिक्षण संस्थान (सीआईएफएनईटी), सोसाइटी फॉर अक्वाकल्चर प्रोफेशनल्स (एस ए पी), एमपीईडीए, एनएसीएसए, नेटफिश, आरजीसीए के अधिकारीगण और कृषकों, हैचरी व प्रसंस्करण संयंत्र आदि के प्रतिनिधि इस कार्यशाला में भाग लिये।

श्री अनिलकुमार पी, उप निदेशक (एक्वा), एमपीईडीए ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने समुद्री खाद्य सुरक्षा को प्राप्त करने के लिए यू एसएफडीए द्वारा अक्वाकल्चर के लिए आरंभ की गई प्रतिरक्षा नियंत्रणों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रतिभागियों को इस अवसर का उपयोग करने का अनुरोध किया।

एमपीईडीए के उप निदेशक (अक्वा) श्री अनिल कुमार पी. स्वागत भाषण देते हुए।

समारोह में बधाई सन्देश देते हुए एमईएआई के अध्यक्ष श्री वी. पद्मनाभम

उद्घाटन के दौरान यूएसएफडीए के उपभोक्ता सुरक्षा अधिकारी डॉ. स्टेनली सेरफिलिंग

श्री पद्मनाभम, अध्यक्ष, भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एसईएआई) ने बधाई संदेश दिया। एफडीए का प्रतिनिधित्व, डॉ. स्टेनली सर्फलिंग, कंज़्यूमर सेफ़्टी अफसर, शेलफिश एंड अक्वाकल्चर पॉलिसी ब्रांच, डिविजन ऑफ सीफूड सेफ़्टी और डॉ. शिव एन वी बाथला, फूड एंड मेडिकल प्रोडक्ट सेफ़्टी कोर्डिनेटर ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए। एमपीईडीए के विशाखापत्तनम क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक डॉ. अंसार अली ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

उद्घाटन समारोह में धन्यवाद ज्ञापन देते हुए एमपीईडीए के उप निदेशक डॉ. अन्सार अली

प्रस्तुतीकरण करते हुए यू एस एफ़ डी ए के कंज़्यूमर सेफ़्टी ऑफीसर डॉ. स्टानली सेर्फ़्लिंग

प्रस्तुतीकरण देते हुए यू एस एफ़ डी ए के फूड एंड मेडिकल प्रोडक्ट सेफ़्टी कोर्डिनेटर डॉ. शिवा एन वी पी बथुला

डॉ. शिव ने 'अक्वाकल्चर फार्मों के लिए निवारक नियंत्रण' पर एक प्रस्तुतीकरण पेश किया, जिसमें एचएएसीपी और निवारक नियंत्रण की संकल्पना और परिभाषा के बारे में बताया गया। डॉ. स्टेनली सर्फलिंग ने 'एक्सप्लानेशन ऑफ प्रिवेंटिव कंट्रोल्स फॉर अक्वाकल्चर फार्म्स' (अक्वाकल्चर फार्मों के लिए निवारक नियंत्रण की व्याख्या) पर एक प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका समुद्री खाद्य की आवश्यकता का लगभग 93% आयात कर रहा है, इसलिए निर्यात करने वाले देशों को चाहिए कि वे समुद्री खाद्य की सुरक्षा के जोखिम की समस्याओं को कम करें। उत्कृष्ट अक्वाकल्चर प्रथा खाद्य सुरक्षा में और निवारक नियंत्रणों को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें निगरानी करना, सुधारात्मक कार्रवाई करना, रिकॉर्ड्स और सत्यापन करना आदि शामिल है। उसके बाद 'फार्मों के बाहर फार्मों के लिए जैविक सुरक्षा के लिए निवारक नियंत्रण' पर एक व्याख्यान डॉ. स्टेनली सर्फलिंग द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस सत्र के दौरान वक्ता ने कहा कि जैविक सुरक्षा फार्म के बाहर से उत्पन्न होने वाले कारणों को नियंत्रित करने से संबन्धित है, इससे फार्म में रोगजनक कीटाणु के प्रवेश करने और बाद में उससे फार्म में बीमारी फैलने का खतरा बढ़ सकता है। उपयुक्त स्थान का चयन करने से जैविक सुरक्षा के खतरे को समाप्त किया जा सकता है और जल की गुणवत्ता की समस्या को भी कम किया जा सकता है, इससे जीव के स्वास्थ्य, गुणवत्ता, सुरक्षा और साथ ही साथ उपचारक खर्चों को भी कम किया जा सकता है।

इसके बाद विभिन्न दलों के बीच चर्चा हुई, जिसमें 'विभिन्न प्रकार के अक्वा फार्मों की जैविक सुरक्षा निवारक नियंत्रण के विकास' से संबंधित विषय दलों को दिया गया। दलों के बीच हुए अभ्यास के बाद डॉ शिव ने 'अक्वाकल्चर दवाओं और प्रयोगशाला परीक्षण अवलोकन पर एक प्रस्तुतीकरण पेश किया। यूएसएफडीए के अनुसार औषधि, जिसमें वस्तुएँ भी शामिल है, जो मनुष्य या अन्य जानवरों या वस्तुओं

में (भोजन से भिन्न) रोग निर्णय, रोग शमन या निदान, चिकित्सा या रोग निवारण के लिए उपयोग किया जाता है, और जो मनुष्य या किसी जानवर के शरीर के किसी भी कार्य की संरचना को प्रभावित करता है। (एफएफडीसीए, की धारा. 201 (जी) (1))। उत्पाद का उद्धिष्ट उपयोग यह निर्धारित करेगा कि क्या यह दवा के रूप में विनियमित है या नहीं। सभी औषधियाँ, चाहे वह सीधे दवा के तौर पर देने के लिए हो, या खाद्य के अलावा देने के लिए हो, यूएसएफडीए सेंटर फॉर वेटेरनरी मेडिसिन (पशु चिकित्सा औषधी के लिए यूएसएफडीए केंद्र) से अनुमोदित किया जाना चाहिए। बिना अनुमोदन के औषधियों का प्रयोग और अनुमोदित औषधियों के दुरुपयोग को उल्लंघन समझा जाएगा। श्रिम्प अक्वाकल्चर के लिए एफ डी ए द्वारा अनुमोदित दवाओं में केवल फोर्मलिन ही सूचीबद्ध है। अक्वाकल्चर में रोगों के उपचार में आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले कई पदार्थ एफडीए द्वारा अनुमोदित नहीं है, जिन्हें कम नियामक प्राथमिकता की नई पशु औषधियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अननुमोदित औषधियों के उदाहरण में क्लोरैम्फिनिकोल, नाइट्रोफुरज़ोन, मैलाचाइट ग्रीन, जेंटियन वायलेट, क्विनोलॉन्स, फ्लोरोक्विनॉलोन आदि शामिल हैं।

18 नवंबर 2016 को कार्यक्रम का आरंभ डॉ. स्टैनली सर्फलिंग द्वारा 'फार्म के भीतर उत्कृष्ट अक्वाकल्चर प्रथायें' पर एक प्रस्तुतीकरण के साथ हुआ। इस प्रस्तुतीकरण में फार्म का स्थान, ले आउट और उसकी बनावट, तालाब प्रबंधन, पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, उर्वरक, खाद्य और खाद्य वितरण, रोग नियंत्रण, फसलन, रसायनों का भंडारण, प्रोबायोटिक्स उपकरण, रोग आकस्मिकता योजना आदि के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

इसके बाद डॉ. शिवा ने 'यूएसएफडीए समुद्री खाद्य एच ए सी सी पी नियमों' पर एक प्रस्तुतीकरण दिया। उसमें यह सूचित किया कि एफडीए अमेरिका में घरेलू और आयातित खाद्य पदार्थ (मांस और मुर्गी को छोड़कर) को नियंत्रित करता है। इस प्रकार अमेरिकी खाद्य आपूर्ति का लगभग 80% एफडीए द्वारा नियंत्रित होता है। उन्होंने संसाधकों से आग्रह किया कि स्वच्छता की कमी को ठीक करें। समुद्री खाद्य में एचएसीसीपी नियमों को पूरा करने में असफलता से इन स्थितियों में संसाधित समुद्री खाद्यों को फूड, ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट की धारा 402 (ए) (4) के अंतर्गत अस्वस्थकारी तरीके से तैयार किए गए, पैक किए गए या संरक्षित खाद्य को अपमिश्रित समझा जाएगा।

प्रस्तुतीकरण के बाद बेहतर अक्वाकल्चर प्रथाओं और निवारक नियंत्रण को विकसित करने पर एक समूह चर्चा हुई। उसके बाद डॉ. शिव ने खाद्य सुरक्षा आधुनिकीकरण अधिनियम (एफएसएमए) पर एक प्रस्तुति दी। उसके बाद, डॉ. स्टेनली सर्फलिंग ने यूएसएफडी ए समुद्री आयात कार्यक्रम पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि अमेरिका में घरेलू और विदेशी संस्थाएं जो मानव अथवा जानवरों के खपत के लिए खाद्य तैयार करने, प्रसंस्करण करने, पैकिंग करने या सुरक्षित रखने के कार्यों में लगा है, को प्राधिकारियों के साथ पंजीकृत होना चाहिए। विदेशी संसाधक और आयातक दोनों अमेरिका के बाजार में समुद्री खाद्य की सुरक्षा के लिए जिम्मेदारी को साझा करते हैं। इसके बाद 'अक्वाकल्चर फार्म के लिए निवारक नियंत्रण' पर एक प्रस्तुतीकरण हुआ।

एमपीईडीए के विजयवाड़ा के क्षेत्रीय केंद्र के उप निदेशक डॉ. एस कंडन और नाक्सा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री शणमुख राव ने क्रमशः एमपीईडीए और और नाक्सा (एनएसीएसए) की गतिविधियों पर प्रस्तुतीकरण पेश किए। यूएसएफडीए दल ने जिम्मेदारीपूर्ण मत्स्यपालन प्रथाओं के माध्यम से समुद्री खाद्य की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए एमपीईडीए और नाक्सा द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। एमपीईडीए के सहायक निदेशक (अक्वा) श्री पी एन विनोद कार्यशाला के बारे में एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। एमपीईडीए के संयुक्त निदेशक (अक्वा) श्री जी रतिनाराज के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला संपन्न हुई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी यूएसएफडीए अधिकारियों के साथ

एमपीईडीए प्रकाशन के लिए विशेष पैकेज		
	सामान्य प्रकाशन	**विशेष पैकेज**
1	इंडियन फिशरी हैंड बुक	**स्टॉक क्लीयरिंग के भाग के रूप में एमपीईडीए के मूल्य वाले प्रकाशनों के 16 पुस्तकों के एक सेट के लिए रु. 300/- मात्र।** **स्टॉक खत्म होने तक ऑफर रहेगा।**
2	एक्स्पोर्टेर्स डायरी डिजिटल सी डी	
3	प्रोडक्ट कैटलोग	
4	फिन फ़िशेस और शेल फ़िशेस ऑफ इंडिया	
5	सीफूड डेलिकेसीस फ्रम इंडिया	
	आलंकारिक मत्स्य प्रकाशन	
6	ओर्नमेंटल ट्रेडर्स/ एक्स्पोर्टेर्स डाइरैक्टरी	
7	वाटर क्वालिटी इन दी ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल 1	
8	इंटेरनोनल ट्रांसपोर्ट ऑफ लाईव फिश इन दी ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल 2	
9	लाईव फुड कल्चर फॉर दी ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल 3	
10	बायो सेक्यूरिटी इन द ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल 4	
11	लिविंग ज्यूवल्स - ए हैंड बुक ऑन फ्रेशवाटर ओर्नमेंटल फिश	
12	चार्ट ऑन फ्रेशवाटर ओर्नमेंटल फिश	
	जलजीव प्रकाशन	
13	डीसीसेस इन ब्रेकवाटर अक्वाकल्चर	
14	डीसीसेस ऑफ कल्चर्ड श्रिम्प एंड प्रोन्स इन इंडिया	
15	ब्रीडिंग, सीड प्रोडक्शन एंड फ़ार्मिंग ऑफ मड कैब	
16	हैचरी सीड प्रोडक्शन एंड फ़ार्मिंग ऑफ कोबिया इनिशिएटीव	

एमपीईडीए के प्रकाशनों /पत्रिकाओं की मूल्यसूची		
	पत्रिकायें	**वार्षिक चंदा (रु.)**
1	प्राइम वीकली (समुद्री उत्पादों की मूल्य सूचक)	350.00
2	एमपीईडीए न्यूज़ लेटर	480.00
	सामान्य प्रकाशनें	**मल्य प्रति कॉपी (डाक खर्च अलग से)**
3	इंडियन फिशरी हैंड बुक	250.00
4	एक्सपोर्टर्स डायरेक्टरी डिजिटल सी डी	50.00
5	प्रोडक्ट कैटलॉग	150.00
6	फिन फ़िशेस एंड शेल फ़िशेस ऑफ इंडिया	125.00
7	स्टेटिटिक्स ऑफ मरीन प्रोडक्ट्स 2010	550.00
8	सीफूड डेलीकेसीस फ्रम इंडिया	100.00
9	एमपीईडीए एक्ट, रूल्स एंड रेग्युलेशन्स	25.00
10	चार्ट ऑफ कॉमर्शियल फ़िशेस ऑफ इंडिया	75.00
11	कॉफी टेबल बुक	900.00
	ओर्नमेंटल फिश पब्लिकेशन्स	
12	ओर्नमेंटल ट्रेडर्स/एक्स्पोर्टर्स डाइरेक्टरी	25.00
13	वाटर क्वालिटी इन द ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल - 1	125.00
14	इन्टरनेशनल ट्रांसपोर्ट ऑफ लाइव फिश इन द ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल - 2	125.00
15	लाइव फुड़ कल्चर फॉर द ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल - 3	125.00
16	बायो सेक्यूरिटी इन द ओर्नमेंटल अक्वाटिक इंडस्ट्री सीरियल - 4	125.00
17	लिविंग ज्यूवेल्स - ए हैंड बुक ऑन फ्रेशवाटर ओर्नमेंटल फिश	150.00
18	चार्ट ऑन फ्रेशवाटर ओर्नमेंटल फिश	50.00
	अक्वाकल्चर पब्लिकेशन्स	
19	डीसीस इन ब्राकिश वाटर अक्वाकल्चर	100.00
20	डीसीस ऑफ कल्चर्ड श्रिम्प एंड प्रोन्स इन इंडिया	100.00
21	ब्रीडिंग, सीड प्रोडक्शन एंड फ़ार्मिंग ऑफ मड क्रैब	50.00
22	हैचरी सीड प्रोडक्शन एंड फ़ार्मिंग ऑफ कोबिया इनिशिएटीव	50.00

कृषकों की बैठक और पुलिया का उद्घाटन

कृषकों के सम्मेलन में उपस्थितों का स्वागत करते हुए श्री बी श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए।

एमपीईडीए के नए स्कीम के अंतर्गत जल कृषि करने वाले कृषकों को विविध प्रयोजनों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। आंध्रा प्रदेश के प्रकाशम जिले के तंगत्तूरु मण्डल के पसूक्कुडुरु गाँव में स्थित मेसर्स श्री साई अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर सोसाइटी ने सोसाइटी के 30 कृषकों के 240 हेक्टयर फार्म क्षेत्र में उपकरणों को आसानी से लाने और ले जाने में सुविधा के लिए पत्तापलेरू क्रीक पर पुलिया के निर्माण के लिए सहायता राशि प्राप्त की। अब तक सभी वस्तुएँ जैसे फीड्स, चूना, ईंधन, पेय जल और अन्य वस्तुएँ सर पर लाद कर क्रीक के पार ले जया करते थे, जिसकी वजह से पुलिया की आवश्यकता महसूस की गई। यह भारत में अक्वा कृषक कल्याण समिति दवारा निर्मित इस प्रकार की पहली पुलिया है, जो एमपीईडीए/ नाक्सा की सहायता से निर्मित की गई है। इसके निर्माण को पूरा करने में 18 माह का समय लगा। एमपीईडीए/ नाक्सा के अधिकारी निर्माण के विभिन्न चरणों में इसका निरीक्षण करते रहे और एमपीईडीए के समितियों के लिए स्कीम के अंतर्गत 25% वित्तीय सहायता देने की सिफ़ारिश की।

श्री साई अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री डी हरी बाबू और अन्य सदस्यों ने 16 जुलाई, 2016 को पुलिया का उद्घाटन भव्य तरीके से करने का निर्णय लिया। एमपीईडीए के सचिव श्री बी श्रीकुमार इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, जिन्होंने उपस्थित भव्य सभा के सामने औपचारिक रूप में पुलिया का उद्घाटन किया।

पुलिया के उद्घाटन के बाद नाक्सा ने पसुक्कुडुरु गाँव में कृषकों की एक बैठक आयोजित की। बैठक में एमपीईडीए के सचिव श्री श्रीकुमार ने अन्य सोसाइटियों से आग्रह किया कि वे चिरस्थाई अक्वाकल्चर के लिए बीएमपी को अपनाएं और अवसंरचना सुविधाओं का निर्माण करें। नाक्सा के कार्यकारी अधिकारी श्री षण्मुख राव ने उपस्थितों का स्वागत किया।

श्री टी बी एस एन मूर्ति, प्राधिकरण सदस्य, एमपीईडीए, श्री डी हरी बाबू, अध्यक्ष, मेसर्स श्री साई अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर सोसाइटी और श्री षण्मुख राव, कार्यकारी अधिकारी, नाक्सा की उपस्थिति में मेसर्स श्री साई अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर सोसाइटी के पुलिया का उद्घाटन करते हुए एमपीईडीए के सचिव श्री बी श्रीकुमार।

अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों में एमपीईडीए के श्री संपतकुमार, संयुक्त निदेशक, डॉ एस कंडन, उप निदेशक, श्री ए लाहिरी, सहायक निदेशक, डॉ श्रीनिवासुलु, सहायक निदेशक, श्री टी बी एस एन मूर्ति, प्राधिकरण सदस्य, एमपीईडीए, मेसर्स श्री साई अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर सोसाइटी. पुसुकुडुरु के अध्यक्ष श्री हरी बाबू, श्री सुब्बा नायडू, जी सी सदस्य, नाक्सा, श्री सुंदर राव, सरपंच, अनंतावरम पंचायत, श्री मुरली, सचिव, तंगत्तुरु अक्वा फार्मर्स असोसियेशन और श्री लाल मोहम्मद, सहायक निदेशक, मत्यपालन विभाग तथा विभिन्न अक्वा फार्मर्स वेल्फेयर असोसियेशनों के 158 कृषक उक्त समारोह और बैठक में उपस्थित रहे। नाक्सा के क्षेत्रीय समन्वयक श्री नन्द किशोर और श्री चंद्रशेखर ने बैठक का आयोजन किया था।

बैठक में भाग लेने वाले कृषकों का एक दृश्य

कृष्णा पुष्करम समारोह

आंध्र प्रदेश सरकार ने कृष्णा, गुंटूर और करनूल जिले में कृष्णा नदी पुष्करम, 2016 समारोह 12 से 23 अगस्त, 2016 तक आयोजित की। इस अवसर पर विशेषकर विजयवाड़ा शहर और कृष्णा जिले में भारी संख्या में तीर्थ यात्रियों के आने की संभावना को ध्यान में रखते हुए आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने विभिन्न सरकारी विभागों से अनुरोध किया कि वे अपने अपने विभागीय कार्यकलापों को आकर्षक तरीके से तीर्थ यात्रियों का ध्यान आकर्षित करने और उन्हें संबन्धित क्षेत्रों के नवीनतम विकास के बारे में जानकारी देने के लिए प्रस्तुत करें। तदनुसार आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा 16 अगस्त, 2016 को मात्स्यिकी क्षेत्र केलिए आबंटित किया।

एमपीईडीए ने 9 वर्ग मीटर का एक स्टाल स्थापित किया और श्रिम्प कृषि (पी मोनोडोन और एल वनामी दोनों), विभिन्न अक्वाकल्चर (सीबास, मड क्रैब, जीआईएफ़टी तिलापिया, स्काम्पी और अलंकारिक मत्स्य) शीर्षक से अपने कार्यकलापों की प्रदर्शिनी लगाई। नाक्सा, आरजीसीए, नेट फिश के विभिन्न कार्यकलापों को भी दर्शाया गया। एमपीईडीए के विभिन्न शाखाओं के कार्यकलाप जैसे अक्वाकल्चर, गुणवत्ता नियंत्रण और बाजार उन्नयन आदि पर प्रकाश डाला गया। स्टाल में आने वाले कृषकों को समुद्री खाद्य में मूल्य वर्धित उत्पाद, अक्वाटिक रोग निवारण सुविधा (एक्यूएफ़), ब्रूडस्टोक मल्टिप्लिकेशन सेंटर (बीएमसी) आदि के बारे में जानकारी दी गई। इसके अलावा बहुत से अन्य कार्य जैसे एंटीबायोटिक अभियान, कृषकों की बैठकें, प्रशिक्षण आदि भी आयोजित किए गए।

माणिकोंडा और कन्कीपाडु के आरजीसीए परियोजनाओं से लाये गए जीवित जीआईएफ़टी तिलापिया और सभी नर स्केम्पी भी प्रदर्शित किए गए। ऐसी प्रजातियों के संबंध में रुचि दिखाने वाले कृषकों से कई पूछताछ प्राप्त हुए। 270 से अधिक कृषक एमपीईडीए के स्टाल

एमपीईडीए के स्टाल में कृषक

नीली क्रांति और नीली अर्थव्यवस्था के बारे में भाषण देते हुए डॉ एस कंडन, उप निदेशक (अक्वा)

आंध्र प्रदेश में चिरस्थाई अक्वाकल्चर पर भाषण देते हुए नाक्सा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के षण्मुख राव

में आए। एमपीईडीए के विजयवाड़ा क्षेत्रीय केंद्र के सहायक निदेशक श्री ए लाहिरी और डॉ श्रीनिवासुलु तथा आरजीसीए के परियोजना प्रबन्धक श्री अप्पला नायडू और श्री श्रीनिवास राव ने प्रर्दशिनी और कार्यक्रमों का आयोजन किया। एमपीईडीए के विजयवाड़ा क्षेत्रीय केंद्र के क्षेत्रीय सहायक श्री एन सुब्बा राव और श्री पी सत्यनारायण तथा क्षेत्रीय पर्यवेक्षक श्री सुमन जोशी और श्री वेणु गोपाल तेलुगू भाषा में एमपीईडीए के कार्यकलापों के बारे में किसानों को समझाया।

आंध्र प्रदेश सरकार के मात्स्यिकी आयुक्त एमपीईडीए/ नाक्सा/ आर जी सी ए के अधिकारियों के साथ एमपीईडीए के पेविलियन में।

बाद में आंध्र प्रदेश सरकार के एएफ़डी और एफ़ (पशु पालन और विकास तथा मत्स्य पालन) विभाग ने इब्राहीम पटनम के पुष्कर घाट में एक विशेष सभागार में किसानों की एक बैठक आयोजित की जिसकी अध्यक्षता आंध्र प्रदेश सरकार के विशेष मुख्य सचिव और ए एच डी डी और एफ़ डॉ मनमोहन सिंह, भा प्र से और आंध्र प्रदेश के मत्स्यपालन आयुक्त श्री रमा शंकर नायक, भा प्र से ने की। एमपीईडीए के क्षेत्रीय केंद्र, विजयवाड़ा के उप निदेशक डॉ एस कंडन ने नीली क्रांति और नीली अर्थव्यवस्था के लिए एमपीईडीए की भागीदारी के संबंध में एक भाषण प्रस्तुत किया। नाक्सा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के षण्मुख राव ने चिरस्थाई अक्वाकल्चर में बेहतर प्रबंधन तरीकों पर एक प्रस्तुतीकरण पेश किया। आंध्र प्रदेश सरकार के मात्स्यिकी आयुक्त ने घोषणा की कि आंध्र प्रदेश सरकार एमपीईडीए के सहयोग से आंध्र प्रदेश के कृषकों के लाभार्थ जल्द ही सीबास और मड क्रैब के लिए एक्यूएफ़ और बीएमसी तथा हैचरियां स्थापित करेगी। मीठे पानी और खारे पानी के 700 से अधिक मत्स्यपालक इस बैठक में उपस्थित रहे।

...Manage Risks. Be Prepared. Every time

MVP Icon®
&
FLASH®

HACCP Monitoring
made easy with MVP Icon and FLASH

- FLASH – surface allergen test, a perfect complement to ATP testing
- MVP Icon – a Multi Variable Platform
- Dashboard Software with Customizable Widgets
- Touch Screen Interface
- On-site Calibration
- Monitor and Record

For Allergen,ATP, pH, temperature, conductivity, and concentration

SHAH BROTHERS

Wadala ShreeRam Industrial Estate,
Unit No-C-32, Third Floor,
G D Ambekar Marg, Wadala
Mumbai, Maharashtra 400031

Email ID: foodkit@shahbros.com
Web: www.shahbros.com
Tel No.: 02243560431/428

Sb SHAH BROTHERS Future. Ready.

भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका को किया जाने वाला श्रिम्प निर्यात विकास की ओर

राष्ट्रीय समुद्री और वायुमंडलीय संस्था द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका को किए जाने वाले श्रिम्प के निर्यात में वर्ष दर वर्ष 17% से अधिक की वृद्धि हुई है और अब यह अक्तूबर माह में 16,409 मेट्रिक टन तक पहुँच गया है, जो तीसरे माह में भी लगातार वृद्धि दिखा रही है।

सितंबर माह में भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका को किए गए श्रिम्प निर्यात में वर्ष दर वर्ष 15.4% की वृद्धि हुई और अब भारत यू एस का सबसे प्रमुख निर्यातक है।

अगस्त माह में रिपोर्ट की गई वर्ष दर वर्ष 40% वृद्धि के बाद यह वृद्धि देखी गई है।

संयुक्त राज्य अमेरिका को इक्वाडोर और चीन दोनों देशों से किए गए श्रिम्प निर्यात में वर्षानुवर्ष बढोत्तरी हो रही है और अक्टूबर में 26% वृद्धि रिपोर्ट की गई है। इक्वाडोर से निर्यात 5,424 टन से 6,845 टन/तक और चीन का निर्यात 2273 टन से 2873 टन/तक बढ़ा है।

प्रमुख 7 श्रिम्प निर्यातको में से इन्डोनेशिया, थाईलैंड और मेक्सिको से निर्यात क्रमश: 6.7%, 2.1% और 13.4% घटा है। आयात किए गए श्रिम्प का मूल्य वर्ष दर वर्ष 9.15 यू एस डॉलर से बढ़कर 10.07 यू एस डॉलर हो गया है।

- www.undercurrentnews.com----

किस प्रकार कुछ मछलियाँ जहरीले प्रदूषण से भी बच जाती हैं

एक नए अध्ययन के अनुसार अटलांटिक किलफिश 8000 गुना अधिक प्रतिरोधक क्षमता रखती है, जो उनकी प्रजातियों में पाई जाने वाली डी एन ए की विविधता के कारण से हैं और वे भारी धातु जैसे अत्यधिक प्रदूषित औद्योगिक प्रदूषण का भी प्रतिरोध कर लेती है।

अटलांटिक किलफिश तापमान के अत्यधिक उतार चढ़ाव, खारापन और ऑक्सीजन स्तर की कमी को भी सहन करने के लिए जानी जाती है। तथापि यू एस के कुछ नदी के मुहानों पर पाये जाने वाले विषैले प्रदूषण के साधारण घातक स्तर जो कठोर प्रकृति की प्रजातियों के लिए भी असाधारण है, को जल्द ही वे उसे अपना लेती है।

कुछ अनुसंधानकर्ता, जिनमें ब्रिटेन के बिर्मिंघम विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ता भी शामिल है, ने प्रदूषण को सहन करने वाली चार जंगली प्रजातियों के जीनोम का विश्लेषण किया ताकि यह पता लगा सके कि इनके अनुकूलन के पीछे का रहस्य क्या है। अनुसंधानकर्ताओं ने यह पाया कि लक्षण के लिए जिम्मेदार जीन उन एरिएल हाइड्रोकार्बन (एएचआर) रिसेप्टर सिग्नलिंग मार्ग है, जो ऐसे सहिष्णु प्रजातियों के विसुग्राहीकरण के मार्ग में शामिल होते हैं। इस प्रकार वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे की एएचआर मार्ग ही प्राकृतिक चयन का मुख्य लक्ष्य है।

टीम ने यह भी दिखाया कि एएचआर मार्ग के विसुग्राहीकरण प्रतिकूल प्रभाव को सुधारती है और सेल चक्र नियमन और प्रतिरक्षा प्रणाली के अनुसार प्रतिपूरक अनुकूलन को प्रभावित करती है।

प्रयोगशाला मॉडल के मुक़ाबले वन्य प्रजाति नदी के मुहाने पर उपलब्ध प्रदूषणों की विविधता के कारण से जटिल प्रतिरक्षा प्रणाली को अपना

लेती है।

बिर्मिंघम विश्वविद्यालय के चेयर ऑफ एनवायरनमेंटल जेनोमिक्स श्री जॉन कोलबोर्न ने कहा कि 'यह रिपोर्ट पर्यावरण प्रदूषण के कारण वन्य मछलियां घातक स्थिति से अनुकूलन करने की जटिल प्रक्रिया पर प्रकाश डालती है।'

श्री कोलबोर्न ने कहा कि 'किस प्रकार आबादी का डी एन ए प्रदूषण के प्रति उनकी संवेदनशीलता में अंतर कैसे करती है, और पर्यावरण के रसायनों के प्रतिकूल प्रभावों के लिए 'सिग्नेचर' प्रकट करती है, यह भी दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि 'यह लगता है कि अटलांटिक किलफिश अपेक्षाकृत परिवर्तित स्तर के वास स्थान पर जीवित रहने के लिए आवश्यक अनुकूलन को विशेष रूप से अच्छी तरह से विकसित किये हुए हैं, क्योंकि उनकी भारी आबादी का आकार और उनकी प्रजातियों के डीएनए विविधता की वजह से है।' अनुसंधानकर्ता चेतावनी देते हैं कि इससे मनुष्यों द्वारा पर्यावरण को पहुंचाए गए प्रदूषण को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकेगा। पर्यावरण विष विज्ञान विभाग और अध्ययन के मुख्य और यू एस के डेविस, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के असोसिएट प्रोफेसर श्री एंड्रू वाईटहेड ने कहा कि: 'यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि जिन प्रजातियों की परिरक्षा हम करना चाहते हैं, वे इस प्रकार के शीघ्र परिवर्तन में अपने को परिवर्तित नहीं कर सकेगा, क्योंकि उनके पास उच्च स्तर के जेनेटिक विविधता नहीं होता है कि वे अपने को शीघ्र ढाल सके। यह अध्ययन जर्नल साइन्स में प्रकाशित किया गया है।

- www.indianexpress.com

आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोच्ची और केयूएफ़ओएस, केरल के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

शैक्षिक और अनुसंधान में सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए आई सी ए आर-केंद्रीय मात्स्यकी तकनीकी संस्थान (सी आई एफ़ टी) कोच्चि ने मात्स्यकी और समुद्री विज्ञान विश्वविद्यालय, केरल (के यू एफ़ ओ एस) के साथ दिनांक 16 नवंबर, 2016 को के यू एफ़ ओ एस, पनंगाड़, कोच्चि में आयोजित विशेष समारोह में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इस समारोह का उदघाटन केरल सरकार के माननीय मत्स्यपालन, हार्बर इंजीनीरींग और काजू उद्योग मंत्री श्रीमती मेर्सिकुट्टी अम्मा और माननीय प्रो चांसलर, के यू एफ़ ओ एस ने किया। एडवोकेट एम. स्वराज, विधायक और के यू एफ़ ओ एस के सेनेट सदस्य माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्रीमती शेर्ली जॉर्ज, अध्यक्ष, कुंबलम ग्राम पंचायत, प्रोफेसर डॉ. ए रामचंद्रन, माननीय वाइस चांसलर, के यू एफ़ ओ एस, प्रोफेसर डॉ के पदमकुमार, प्रोवाइस चांसलर, के यू एफ़ ओ एस, डॉ सी एन रविशंकर, निदेशक, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी, कोच्चि; डॉ गोपालकृष्णन, निदेशक, आई सी ए आर-सी एम एफ़ आर आई, कोच्चि और श्री टी मोहन दास, राज्य सूचना अधिकारी, एन आई सी, केरल विशेष अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित रहे। मंच पर उपस्थित उच्च पदधारियों, के यू एफ़ ओ एस के फ़ैकल्टियों, विभागाध्यक्षों, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी और आई सी ए आर-सी एम एफ़ आर आई के वैज्ञानिकों और अन्य आमंत्रित अतिथियों के सम्मुख डॉ सी एन रविशंकर, निदेशक, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी, कोच्चि ने डॉ वी एम विक्टर जॉर्ज, रजिस्ट्रार, के यू एफ़ ओ एस को हस्ताक्षिरत सहमति ज्ञापन सौंपा। अपने संक्षिप्त भाषण में निदेशक, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी ने जमीन पर, समुद्र में और ठंडे पानी में मत्स्यन, खाद्य सुरक्षा और भविष्य में गुणवत्ता प्रबंधन आदि पर सभी क्षेत्रों में सभी हितधारियों के साथ और गहरा संबंध बनाए रखने का आश्वासन दिया।

ताजा पानी मत्स्य पालन के लिए सीएमएफ़आरआई की पहल

आज के समय में जब जलीय खर-पतवार ताजा पानी के स्रोतों को और पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचा रही है तो केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के एरणाकुलम कृषि विज्ञान केंद्र ने खरपतवार की समस्या से निजात पाने के लिए तालाबों में मत्स्यपालन करने की पहल आरंभ की है।

कृषि विज्ञान केंद्र ने एक ताजा पानी मछली ग्रास कार्प (टेनोफोरींगोडोन इडेला) को पालने की तकनीक विकसित की है जो जलीय खर पतवार को खाद्य के तौर पर खाती है, ताकि ताजा पानी के स्रोतों से खर पतवार की समस्या को समाप्त किया जा सके।

ए गोपालकृष्णन, निदेशक सी एम एफ़ आर आई ने ग्रास कार्प के फिंगरलिंग्स को कोच्चि

के पास त्रिपूणित्तुरा के मंदिर के तालाब में छोडते हुए कार्यक्रम को आरभ किया।

उनके अनुसार खरपतवार के अधिक बढ़ जाने से तालाबों और अन्य ताजे पानी के स्रोतों के पारिस्थितिकी में ग़डबडी हो जाती है। उन्होंने कहा कि पानी के स्रोतों में पाये जाने वाले 140 प्रकार के जलीय पौधों में सालविनिया, हयड्रिल्ला और पिसिता आदि ताजे पानी के स्रोतों के लिए हानिकारक है।

ग्रास कार्प इन खर पतवारों को अपने शरीर भार से 2-3 गुना तक खाद्य के तौर पर खा जाती है। क्योंकि ये मछली तालाबों में प्रजनन नहीं करती, इसलिए इसका प्रबंध करना आसान है। उन्होंने कहा कि खर पतवारों को खत्म करने के लिए बाजार में प्राप्त होने वाले वीडिसाइडेस, रासायनिक मिश्रण आदि मत्स्य सम्पदा और पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचाएगा।

- बीजिनेस लाइन

लुप्तप्राय 'महासीर' मछली का राजस्थान में प्रजनन

लगभग 4 वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद वन विभाग ने उदयपुर के एक हैचरी में देशी मछली महासीर को प्रजनन कराने में सफलता हासिल की है। महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश के बाद राजस्थान तीसरा राज्य है, जहां महासीर प्रजाति को पाला जाता है, क्योंकि यह ठंडे पानी में पलने वाली मछली है और इसे इस राज्य में मौसम को ध्यान में रखते हुए पालना कठिन है।

मादा महासीर बहाव के विरुद्ध कई किलोमीटर दूर तक ऊपर की ओर तैरने के लिए जानी जाती है और वहाँ छोटे झरनों में अंडे देती है और अंडों को प्राकृतिक तरीके से बहते हुए अंडे से बच्चे निकलने के लिए छोड़ देती है! चूंकि हिमाचल सरकार गोल्डन महासीर को पालती है, उदयपुर हेचरी ने 'टोर कुदरी' का प्रजनन कराया है, यह प्रजाति कावेरी नदी और उसकी सहायक नदियों में पाई जाती है। हाल ही में अंडों से लगभग 2500 महासीर निकली है।

परियोजना के तकनीकी परामर्शदाता श्री इस्माईल आली दुर्गा ने टी ओ आई को बताया कि 'वर्ष 2012 में में टाटा पावर के लोनावाला स्थित फार्म से हमने 1500 चारों को प्राप्त करना शुरू किया था, हमने उसे विशेष खाद्य देकर विभाग के सज्जनग़ढ जैविक पार्क में इन वर्षों तक उसे मौसम के अनुकूल बनाने के लिए ब्रूडर अवस्था तक पाला, ताकि वे स्थानीय मौसम की स्थितियों के अनुकूल अपने को ढाल सके'।

श्री दुर्गा ने पुनः कहा 'प्रजनन की कोशिश इस वर्ष की गई। विशेषज्ञों ने अंडों और स्पर्म को फ्लोटिंग ट्रे में आपस में मिलने के लिए प्रक्रिया किया। छिद्रित पाइप को नियमित अंतराल पर पंकचर करते रहा ताकि पर्याप्त मात्रा में ऑक्सिजन वाले जल सीधे ट्रे और अंडों पर आ सके। इस तरह 2500 चारा प्राप्त किए गए'।

मुख्य वनपालक (वन्य जीव) श्री राहुल भटनागर ने टी ओ आई से कहा 'आज के समय जब प्रकृतिक जल में महासीर की आबादी संख्या में शीघ्र घट रही है, इससे यह प्रजाति लुप्त हो जाएगी, तब हैचेरी में इसका प्रजनन परिरक्षण की नजरिए से राज्य के लिए ही नहीं, बल्कि मत्स्यन द्वारा जीविकोपार्जन के अवसर उपलब्ध कराने की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।' श्री भटनागर ने पुनः कहा, 'रक्षित और प्रेरित प्रजनन के माध्यम से विभाग का यह लक्ष्य है कि इन लुप्त प्रायः प्रजाति की परिरक्षा करें और साथ ही साथ उसे प्रकृतिक जल में उसका कायाकल्प भी करें। तीन महीने के बाद जब ये शावक अंगुल बन जाएगा, उसे पुराने जल में यानि भागदरा झील और अन्य वन के भीतर के जल में छोड़ दिया जाएगा, ताकि वे जीवित रहे और उनका परिरक्षण हो सके'।

महासीर से भरी झील में मत्स्यन की बहुत अधिक संभावनायें है और स्पोर्ट्स के तौर पर इसे देशी और विदेशी पर्यटकों के बीच बहुत अधिक पसंद किए जाते हैं। क्योंकि हिमाचल प्रदेश के पास सभी सुविधाओं वाले पूरी तरह से विकसित एक हैचरी है, राज्य के वन विभाग ने इस कार्य को जन जातीय इलाकों के विकास के लिए आबंटित रुपये 10 लाख की एक छोटी बजट के साथ हाथ में लिया था।

राजस्थान में महासीर की उपस्थितिः महासीर को उसके आकार और प्रदूषण विहीन जल में निवास करने के कारण नदियों का शेर कहा जाता है। प्रदूषण, मानव की दखल, चेक बांधों का निर्माण आदि इसके वंश नाश का कारण बना। पर्यावरण और वन मंत्रालय ने महासीर के परिरक्षण को गंभीरतापूर्वक देशीय कार्यक्रम के रूप में अपनाया है। चंबल और मही नदी से जुड़े झीलों में महसीर की भरमार थी। दक्षिणी राजस्थान में बदाच नदी के किनारे तीन चार दशक पहले महसीर की भरमार थी, लेकिन अब वे बहुत कम दिखाई देती है। उदयपुर में महासीर बड़ी झील में बहुतायत में पाये जाते हैं, लेकिन वे वहाँ पर प्रजनन नहीं करते।

- दी टाइम्स ऑफ इंडिया

तकनीकी सहयोग स्कीम के अंतर्गत क्षमता का विस्तार, कोलंबो योजना में आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोचीन में मात्स्यिकी का विस्तारण

प्रतिभागियों और प्रभागों के अध्यक्षों के साथ बात चीत करते हुए डॉ रविशंकर, निदेशक

आई सी ए आर के केंद्रीय मात्स्यकी तकनीकी संस्थान, कोचीन ने 'तटीय मात्स्यिकी विस्तारण करने के तरीके' पर 15 से 26 नवंबर, 2016 तक कोलंबो योजना के सदस्य राज्यों के भागीदारों के लिए एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम को तकनीकी सहयोग स्कीम (टी सी एस) के अंतर्गत भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के आई टी ई सी ने प्रायोजित किया था। बंगला देश से दो विदेशी भागीदार श्री लूत्फ़र रहमान और श्री शरीफ अहमद इस कार्यक्रम में शरीक हुए।

प्रारम्भिक सत्र की अध्यक्षता करते हुए आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी के निदेशक डॉ सी एन रविशंकर ने प्रभावी ढंग से विस्तार के लिए नवीन तरीकों के प्रसार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सूचित किया कि उपयुक्त तक्नोलोजी समस्याओं की प्राथमिकता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए असली उपभोक्ता तक पी आर ए तरीके से पहुँच जाने चाहिए। आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी के महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने भाग लेने वालों को अपने अनुभव और विचार अध्ययन को और अधिक प्रयोगिक बनाने के लिए ई एल सी के माध्यम से साझा करें। प्रारम्भिक सत्र में सभी विभागों/अनुभागों के प्रतिनिधि और संसाधक वैज्ञानिक तथा भागीदार उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण सत्र में विस्तारण का आकलन, समस्या को प्राथमिकता देना, भागीदारी तकनीक, उद्यमकर्ता विकास, परियोजना की निगरानी और मूल्यांकन तकनीक, होने वाले प्रभाव का निर्धारण करने की पद्धति और लिंग निर्धारण करने पर होने वाले मूल्य विश्लेषण जैसे विषयों के विभिन्न पहलुओं को व्यापक रूप से कवर किया गया। इसके अलावा, मत्स्य पालन के क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर तकनीकी सत्र में जिम्मेदार फसलन, प्रसंस्करण और गुणवत्ता आश्वासन, खाद्य सुरक्षा, एच ए सी पी, मत्स्य जैव विविधता संरक्षण, न्युट्रास्यूटिकल में तकनीकी नवाचार और रोगजनक कारणों के उत्पन्न होने जैसे विषयों को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया। आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी के वैज्ञानिकों के अलावा आई सी ए आर-सी एम एफ़ आर आई, सिफनेट (मात्स्यिकी, केन्द्रीय मत्स्य नौचालन व इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थान), निफ़ाट (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीस पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलोजी एंड ट्रेनिंग) और एमपीईडीए (समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण) आदि के विशेषज्ञ संसाधकों रूप में उपस्थित रहे। विभिन्न क्षेत्रीय दौरा कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षार्थियों को एरणाकुलम जिले के न्जारक्कल के के वी के की गतिविधियों से भी परिचय कराया गया; तथा मत्स्य पालन क्षेत्र में काम कर रहे मत्स्य लैंडिंग केंद्र, उन्नत मत्स्य बाजार, अन्य संबद्ध संस्थानों और एरणाकुलम जिले के एक अंतर्देशीय मत्स्य पालन गांव कुंबलम में जो सक्रिय रूप से सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) में भाग ले रहे हैं, में भी दौरा कराया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम 26 नवंबर, 2016 को प्रतिभागियों द्वारा अपने देश की प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ। समापन में प्रतिभागियों ने बांग्लादेश के मत्स्य पालन के क्षेत्र के बारे में संक्षिप्त अवलोकन के साथ साथ बांग्लादेश के समुद्री अकादमी के बारे में भी संक्षिप्त विवरण दिया। उसके बाद डॉ सुशीला मैथ्यू, प्रभारी निदेशक, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी, कोचीन ने प्रमाणपत्र प्रदान किया।

- सीआईएफ़टी

सीएमएफआरआई द्वारा बांग्लादेश के समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र को मार्गदर्शन

केंद्रीय समुद्री मत्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आई) ने बांग्लादेश के समुद्री मात्स्यकी क्षेत्र को बेहतर बनाने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करके सहायता का हाथ बढ़ाया है।

सी एम एफ आर आई ने भारत - बांग्लादेश संयुक्त कार्य दल (जे डब्ल्यू जी) की सिफ़ारिश पर अनुवर्ती कार्य के रूप में मत्स्यकी और अक़्वाकल्चर के क्षेत्र में पड़ोसी देश को समुद्री मत्स्य स्टॉक के मूल्यांकन के क्षेत्र में तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया है।

सी एम एफ आर आई, जो भारत के सबसे बडे समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान है, ने समुद्री मत्स्य के स्टॉक के मूल्यांकन के क्षेत्र में आवश्यक कामगार और विशेषज्ञता विकसित करने के लिए बांग्लादेश को अपना सहयोग दिया है, जो कि मत्स्य उद्योग के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

एक अंतर सरकारी संगठन (बी ओ बी पी-आई जी ओ) के बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम के सहयोग से सी एम एफ आर आई ने उस देश के चुने हुए मात्स्यकी अधिकारियों को उष्णकटिबंधीय मत्स्यों के स्टॉक के मूल्यांकन के तरीकों पर विशेष रूप से प्रशिक्षित किया है।

बांग्लादेश मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, मैयूमेंसिंग और चिटागोंग विश्वविद्यालय के समुद्री विज्ञान और मात्स्यकी संस्थान से जुड़े बांग्लादेश के मात्स्यकी विभाग के मध्यम स्तर के 12 अधिकारियों को सी एम एफ आर आई के कोच्चि स्थित मुख्यालय में प्रशिक्षित कराया गया।

सी एम एफ आर आई के निदेशक श्री ए. गोपालकृष्णन ने कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य समुद्री मछलियों के स्टॉक के मूल्यांकन में आवश्यक कामगार और विशेषज्ञता विकसित करना और इस क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण डाटा संग्रहण प्रणाली को विकसित करने के लिए और आवश्यक मात्स्यकी और जैविक आंकड़ों के आदान-प्रदान के लिए तथा समुद्री मत्स्य संसाधनों के संरक्षण और टिकाऊ प्रबंधन में मददगार साबित होगा।

प्रतिभागियों का यह मानना था कि प्रशिक्षण इतना प्रभावशाली है कि मछली के स्टॉक के मूल्यांकन के क्षेत्र में नए विचारों से उन्हें बांग्लादेश में मत्स्य सम्पदा को स्थायी रूप से फसलन के लिए उपयोग में लाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने यह भी विचार प्रकट किया कि बंगलादेश के लोकप्रिय मछली हिल्सा के संरक्षण और प्रबंधन करने के लिए सी एम एफ आर आई द्वारा प्रदान की गई तकनीकी मार्गदर्शन बांग्लादेश के लिए एक बहुमूल्य सहयोग था।

- बीजिनेस लाइन

आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा मेघालय में एक एकल दिवसीय निदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

आई सी ए आर-केंद्रीय मात्स्यिकी तकनीकी संस्थान, कोच्चि ने मेघालय सरकार, शिलांग के मत्स्य पालन विभाग और उप आयुक्त का कार्यालय, पश्चिम जयंतिया हिल्स जिला, मेघालय सरकार के सहयोग से मछली को 'सी ओ एफ़ आई एस के आई (मछली सुखाने के सामुदायिक भट्टा) का प्रयोग करके साफ सफाई और वैज्ञानिक तरीके से धुएं से सुखाने के बारे में 19 नवंबर, 2016 को एक एकल दिवसीय निदर्शन कार्यक्रम का आयोजन उमलधकुर, अमलारेम उप मण्डल, पश्चिम जयंतीया हिल्स

प्रतिभागियों से बातचीत करते हुए डॉ. एम.एम. प्रसाद

जिला, मेघालय में किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. एम.एम. प्रसाद, विभागाध्यक्ष, एम एफ बी और डॉ. के.के. आशा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने श्री वी.एन. श्रीजीत और श्री पी. सुरेश की तकनीकी सहायता से किया। इस कार्यक्रम में उमलधकुर और थांगबुली गावों के मछुआरे शामिल रहे। कार्यक्रम से कुल 64 महिला मछुआरों को फायदा पहुंचा इस कार्यक्रम में डी आर डी ए, जोवाई के अधिकारीगण भी शामिल रहे। धुएं से मच्छली की प्रक्रिया करने से पहले और बाद में मछली को हवा में सुखाने के उद्देश्य से एक छोटे से सीमेंट के प्लेटफार्म का भी निर्माण किया गया। डॉ. प्रसाद ने मछली को धुएं से प्रक्रिया करने का प्रदर्शन आरंभ से अंत तक करके दिखाया, जिसमें पकड़ने के बाद उसका रखरखाव करने में स्वच्छता के पहलुओं को भी शामिल किया गया।

वर्तमान मछली सुखाने का सामुदायिक भट्टा का मॉडल पूरी तरह से लाया और ले जाए जा सकने वाला है, जिसे किसी भी स्थान पर लाया-ले जाया जा सकता है मछलियों के धुएं से प्रक्रिया करने के लिए उपयोग में लाये गए ट्रे 304 खाद्य ग्रेड के स्टील से बना है। मछली की सुरक्षा के लिए इस स्टील का प्रयोग बहुत ही उपयोगी है प्रतिभागियों को भिनभिनाते मखियों के उपद्रव को नियंत्रित करने के लिए नीम, सिट्रोनेला और लेमन ग्रास के तेल को पानी के साथ छिड़काव करने का महत्व भी बताया गया। इन वनस्पतिक उत्पादों का ये लाभ है कि इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता और इससे कोई प्रदूषण भी नहीं होता। एक और महत्वपूर्ण पहलू जो मछुआरों को बताया गया कि पानी के साथ नीम के तेल को केवल अगल बगल में ही छिड़कने चाहिए और मछलियों के संपर्क में नहीं आना चाहिए।

श्री अरुण कुमार केम्हावी, भा प्र से, उप आयुक्त, पश्चिम जयंतिया पहाड़ी जिला, मेघालय, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने मछली के धुएं से प्रक्रिया करने और मछली धुआं सामुदायिक भट्टा को काम में लाने के लाभ का पूरा विवरण सीखने में भी गहरी दिलचस्पी दिखाई। धुएं से मछली की प्रक्रिया कार्य तीन बैचों में किया गया। आई सी ए आर-सी आई एफ टी के प्रशिक्षण का सबसे उल्लेखनीय प्रभाव यह पड़ा कि उमालधकुर गांव की एक सक्रिय महिला मछुआरिन श्रीमती अल्मा ने आई सी ए आर-सी आई एफ टी द्वारा दी गई प्रशिक्षण के आधार पर मछली का अचार बनाना शुरू कर दिया है और उत्पाद को बेचकर स्थाई रूप से आमदनी कमा रही है मछुआरों को स्थायी आमदनी के लिए जोवाई, शिलांग और गुवाहाटी में उत्पादों के विपणन के अवसरों के बारे में भी बताया गया।

- सी आई एफ़ टी

आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोचीन द्वारा डोलफिनों पर जागरूकता कार्यक्रम

आई सी ए आर-केंद्रीय मत्स्यकी तकनीकी संस्थान, कोचीन ने 'धनिक पिंग के प्रयोग से मत्स्यन जाल को डोल्फ़िनों के हमले से बचाना' विषय पर 21 दिसंबर 2016 को एर्णाकुलम जिले के चेल्लानम मत्स्यहरण गाँव में एक एकल दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया। औपचारिक रूप से इस कार्यक्रम का उदघाटन आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी के निदेशक श्री सी एन रविशंकर ने किया। मत्स्यफेड, एर्णाकुलम के जिला प्रबन्धक श्री सी डी जॉर्ज इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में श्री ए एम वर्गीस, कार्यकारी सदस्य, परंपरागत मछुआरा

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आईसीएआर-सीआईएफटी के निदेशक डॉ सी.एन. रविशंकर

यूनियन ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी द्वारा परीक्षण प्रयोग के तौर पर दिये गए पिंगर्स काफी सफल रहे। उनके अनुसार परिणाम काफी प्रोत्साहनीय रहा।

पिंगर एक ध्वनिक उपकरण है जो मत्स्यन जाल पर आक्रमण करके भारी नुकसान पहुँचने वाले और पकड़ी गई मछलियों को नष्ट करने वाले डोल्फ़िनों को दूर भागने के लिए बनाया गया है। पिंगर को 70 किलो हार्ट्स से अधिक के ध्वनि तरंगों को पैदा करने के लिए तैयार किया गया है, जो डोल्फिन के अधिकतर प्रजातियों को सुनाई पड़ता है। यह सिग्नल एक अलार्म के रूप में कार्य करता है, और कुछ मामलों में पिंगर डोल्फ़िनों को उसके प्रतिध्वनि स्थान का प्रयोग करने के लिए उत्तेजित करता है और पिंगर्स और मत्स्यन जाल की उपस्थिति के बारे में चेतावनी देता है। भले ही यह ध्वनि वेग मानव को सुनाई न पड़ता हो, लेकिन यह डोल्फ़िनों के लिए परेशानी पैदा करती है और उन्हें मत्स्यन जाल के पास आने से रोकता है। डोल्फिन पिंगर्स में न बदल सकने वाला और रीचार्ज न कर सकने वाला लिथियम लोन बैटरी का प्रयोग किया गया है। डोल्फिन पिंगर्स की ये बैटरियाँ प्रतिदिन 12 घंटे प्रयोग करने पर 12 महीनों तक चलेगा।

श्रीमती एस शिंनसी, परियोजना अधिकारी, मत्स्यफेड क्लस्टर नंबर-1, श्रीमती डेज़ी बिन्नी, उप प्रबन्धक, मत्स्यफेड और श्री आर अंटोनीस, अध्यक्ष, चेल्लानम - कंडक्कडवु फिशरमेन डेवलपमेंट वेल्फेयर को आपरेटिव सोसाइटी ने भी अपने अपने विचार प्रकट किए। डॉ लीला एडविन, अध्यक्ष, मत्स्यन तकनीकी प्रभाग, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी ने उपस्थितों का स्वागत किया, डॉ एम पी रमेशन, प्रधान वैज्ञानिक, आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी ने धन्व्वाद ज्ञापन पेश किया। इसके बाद रिंग सीन मत्स्यहरण और ध्वनि पिंगर्स पर एक प्रस्तुतीकरण पेश किया और उसके प्रयोग पर एक प्रत्यक्ष निदर्शन भी आयोजित किया। आई सी ए आर-सी आई एफ़ टी द्वारा 'मेरा गाँव मेरा गौरव' (एम जी एम जी) कार्यक्रम के अंतर्गत अपनाए गए आस पास के गावों के 90 ग्रामीणों ने इस कार्यक्रम में क्रियात्मक रूप से भाग लिया और अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किए।

- सी आई एफ़ टी

नई नियुक्तियाँ

- श्री अरुविक्करशु के ने सहायक निदेशक (अक्वा) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
- डॉ के पाउ बियक लुन ने सहायक निदेशक (ई पी) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
- डॉ गोपाल आनंद कंडीकटला ने सहायक निदेशक (अक्वा) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
- श्री भूषण सुरेश चन्द्र पाटिल ने सहायक निदेशक (सांख्यिकी) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
- डॉ राहुल देबबर्मा ने तकनीकी अधिकारी (क्यू सी) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

स्थानांतरण

- श्री भास्करन नायर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (ई पी), एमपीईडीए, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को एमपीईडीए के मुख्यालय में स्थानांतरित किया गया है।
- श्री रेक्सी रोड्रिग्स, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (अक्वा), एमपीईडीए क्षेत्रीय केंद्र, कोच्चि को एमपीईडीए के मुख्यालय में स्थानांतरित किया गया है।
- श्री अनूप कृष्णन टी एस, कनिष्ठ लिपिक, एमपीईडीए क्षेत्रीय केंद्र, विजयवाड़ा को पदोन्नति पर एमपीईडीए के व्यापार संवर्धन कार्यालय, नई दिल्ली में स्थानांतरित किया गया है।
- श्री एलेक्स टी हेजकिएल, कनिष्ठ लिपिक, एमपीईडीए मुख्यालय को एमपीईडीए के क्षेत्रीय केंद्र, विजयवाड़ा में स्थानांतरित किया गया है।

सेवा निवृत्तियाँ

- श्री वाल्टर जॉन मेयन, सहायक निदेशक (क्यू सी) एमपीईडीए प्रयोगशाला, नेल्लोर विभिन्न पदों पर 30 वर्ष और 3 माह की उत्तम सेवा के बाद स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हो गए हैं।
- श्रीमती सूर्यकुमारी, क्षेत्रीय सहायक, एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा विभिन्न पदों पर 22 वर्ष और 3 माह की उत्तम सेवा के बाद अधिवर्षिता की आयु होने पर सेवानिवृत्त हो गई हैं।

FAHAD INTERNATIONAL L.L.P

www.rntc-seafood.com || Info@rntc-seafood.com || TEL: +91 484 222 9023

Sourcing/buyer agency for processed seafood products. Mob: +91 9249 7690 23

Cuttlefish | Squid | Baby octopus | Crabs | Lobster | Tuna | Indian Mackerel | Ribbon fish | Grouper | Snapper | Pomfret | Leather Jacket fish & More....

Raw / Blanched / Cooked: ||: Shrimps HOSO, HLSO, PDTO, PND, PUD

PRAWN FEED
MANAMEI
VANNAMEI FEED
VANNAMEI FEED
SHRIMP FEED
PROFEED 4
BLACK TIGER SHRIMP FEED
TITAN
PRAWN FEED
BLACK TIGER SHRIMP FEED
IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD., Thailand.
AVANTI
FEEDS LIMITED
In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company
Aiding sustainability & reliability to Aquaculture
Shrimp Hatchery
Feed Plant - Gujarat
Prawn Feed & Fish Feed
Prawn Processing & Exports
INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN
• GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
• LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY
AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS
AVANTI A.H.C.P. RANGE
Avant Miner Mate
Chelated Trace Mineral Supplement
Avant Saldo Mixtos
Marine Mineral
Avant D-Flow
Water Quality Improver
Avant Pro W
Soil & Water Probiotic
Avant Bact
Gut Probiotic
Avant AmmoniAbsorb
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE
Ammonia Absorber
Avant Life
Oxy-Generator
Avant Immupak
Immunity Enhancer
Corporate Office: Avanti Feeds Limited
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com
Regd. Office: Avanti Feeds Limited.
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

No. KERENG/2013/61656